अध्याय – 04 || Chapter - 04

ब्रिटिश कालीन नीतियों के विरुद्ध भारतीय प्रतिक्रिया

1857 की क्रांति

प्रमुख जनजाति विद्रोह

प्रमुख कृषक विद्रोह

Chapter - 05

Indian reaction against British policies

Revolution of 1857

Major Tribal Rebellion

Major Peasant Rebellion

Previous Year Question

2020	VS	1) अहोम विद्रोह || Ahome Rebellion
2020	VS	2) मोपला विद्रोह || Moplah rebellion
2020	VS	3) भील विद्रोह || Bheel Rebellion
2019	VS	4) उलगुलान || Ulgulan
2019	VS	5) भीमा नायक || Bhima Nayak
2019	Short	6) ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आदिवासियों की प्रतिक्रिया के कारणों को आदिवासी विद्रोह के प्रकाश में उद्घाटित कीजिए || Reveal the reasons for the reaction of tribals against British rule in the light of tribal revolts .
2018	Short	7) बिरसा मुंडा आंदोलन का एक संक्षिप्त वर्णन दीजिए || Give a brief account of Birsa Munda movement
2018	Short	8) कुंवर सिंह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए । || Write a short note on Kunwar Singh
2018	Long	9) 1857 ईसवी के विद्रोह की असफलता के कारणों को चिन्हित कीजिए तथा इसके महत्व पर प्रकाश डालिए || Trace the causes of failure of the revolt 1857 and through light on its importance.
2017	VS	10) बिरसा मुंडा || Birsa Munda

2017	Short	11) 1857 के विद्रोह की प्रकृति की विवेचना कीजिए। क्या है स्वतंत्रता संग्राम था ? || Discuss the nature of the revolt of 1857. Was it a war of independence?
2016	VS	12) कोल विद्रोह || Kol Rebellion
2016	Short	13) 1855-56 का संथाल विद्रोह शोषण के विरुद्ध एक तीव्र प्रतिक्रिया थी । व्याख्या करें || Santhal Rebellion of 1855-56 was a Shahrukh reaction against exploitation. Explain
2014	Long	14) 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों का विस्तार से वर्णन कीजिए || Discuss in detail the causes of the first was of independence of 1857.

5.1.1) 1857 की क्रांति : पृष्ठभूमि

"भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही उसका विरोध शुरू हो गया था ब्रिटिश विस्तारवादी नीतियों, आर्थिक शोषण और विभिन्न वर्षों में प्रशासनिक नवोन्मेष ने भारतीय राज्यों के शासकों, सिपाहियों, जमींदारों, किसानों, व्यापारियों, शिल्पकारो, पंडितों, मौलवियों इत्यादि की स्थिति को प्रतिकूल रुप से प्रभावित किया। यह धीमी गति से बढ़ता असंतोष 1857 में एक हिंसक तूफान के रूप में भड़का जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया।"

1) 10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों द्वारा ब्रिटिश कंपनी शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह
2) **तात्कालिक कारण :-** सेना में चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग
3) **वास्तविक कारण :-** 1757 के बाद की ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियां
4) **अन्य नाम :-** प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह आदि
5) **प्रभाव :-** भारत से कंपनी शासन का अंत तथा क्राउन शासन का आरम्भ
6) इसमें सैनिकों के अलावा भारतीय कृषक, मजदूर, जनजातियां, शिल्पकार व कुछ रियासते भी शामिल थी

- **ब्रिटेन प्रधानमंत्री :- पामर्स्टन**
- **ब्रिटेन की महारानी :- विक्टोरिया**
- **गवर्नर जनरल :- कैनिंग**
- **मुख्य सेनापति :- जॉर्ज एनिसन**
- **भारतीय सम्राट :- बहादुरशाह जफर (द्वितीय)**
- **प्रतीक :- कमल और रोटी**
- **प्रथम घटना :- 12 मई 1857 को लाल किले पर अधिकार**
- **परिषद :- बख्त खां (बरेली)**
- **अंग्रेजी आपातकालीन मुख्यालय :- इलाहाबाद**

5.1.1) Revolution of 1857: Background

"With the establishment of British rule in India, its opposition started, British expansionist policies, economic exploitation and administrative iniatiative adversely effects status of rulers, sepoys, zamindars, farmers, traders, craftsmen, pundits, clerics etc. of Indian states. . This slow-growing discontent flared up in 1857 as a violent storm the foundation of the British Empire in India.

1) Armed rebellion against British Company rule by Indian soldiers at Meerut on 10 May 1857
2) **Immediate cause :-** use of cartridges in army
3) **Actual reason:-** British Colonial Policies After 1757
4) **Other names:-** First War of Independence, Sepoy Mutiny etc.
5) **Effect:-** End of Company rule in India and beginning of Crown rule
6) Apart from soldiers, Indian farmers, laborers, tribes, craftsmen and some princely states were also involved .

- **Britain Pm:- Palmstern**
- **Queen of Britain :- Victoria**
- **Governor General :- Canning**
- **Chief general :- George Anison**
- **Indian king :- Bahadur Shah Zafar (II)**
- **Symbol:- lotus and Roti**
- **First incident :- Captured Red Fort on 12th May 1857**
- **Council:- Bakht Khan (Bareilly)**
- **British emergency headquarters :- Allahabad**

1857 से पूर्व के प्रमुख सैनिक विद्रोह

1) **1764 :** बक्सर विद्रोह
2) **1766 :** का सैनिक विद्रोह (क्लाइव)
3) **1806 :** वेल्लोर विद्रोह (सेना में प्रथम धार्मिक विरोध)
4) **1824 :** बैरकपुर 47 वीं रेजिमेंट
5) **1825 :** असम तोपखाने का विद्रोह
6) **1838 :** शोलापुर विद्रोह
7) **1844 :** फिरोजपुर 64 वीं रेजिमेंट
8) **1849-50 :** गोविंदगढ़ विद्रोह

1) ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के दो अंग थे - एक वह जिसमें सैनिक तथा अफ़सर सभी अंग्रेज थे और दूसरा वह जिसमें कमीशन प्राप्त अधिकारी तो अंग्रेज थे किंतु सिपाही तथा जूनियर अफसर भारतीय थे
2) अंग्रेज सैनिकों की तुलना में उनका वेतन कम था और उच्च पदों के द्वार उनके लिए बंद थे
3) इसके अतिरिक्त छोटे से छोटा अंग्रेज अफसर भी अनुभवी और पुराने हिंदुस्तानी अफ़सर का अपमान कर दिया करता था
4) कभी कभी अंग्रेजों के दुर्व्यवहार के कारण उनमें विद्रोह फूट पड़ता था
5) सिपाहियों को आदेश दिया गया कि वे अपनी दाढ़ी मुड़वाये, अपने माथे पर तिलक ना लगाएं, कानों में बालियां ना पहने और पगड़ी के स्थान पर विशेष प्रकार का कड़ा गोल हैट पहने जिसमें चमड़े का तुर्रा लगा होता था। चमड़े का तुर्रा सुअर या गाय की खाल का बना होता था
6) 6 मई 1806 में एक बटालियन ने विद्रोह कर दिया किंतु उसे दबा दिया गया । 10 जुलाई को पुनः विद्रोह फूट पड़ा भारतीय सिपाही उठ खड़े हुए संतरियों को मार डाला तथा लगभग 100 अंग्रेज अफसरों एवं सैनिकों का वध कर दिया गया और किले की दीवारों पर मैसूर का पुराना झंडा फहरा दिया गया

Major military rebellions before 1857

1) **1764 :** Buxar Rebellion
2) **1766 :** Revolt of the soldiers (Clive)
3) **1806 :** Vellore rebellion (first religious protest in the army)
4) **1824 :** Barrackpore 47th Regiment
5) **1825 :** Assam Artillery Rebellion
6) **1838 :** Solapur Rebellion
7) **1844 :** Firozpur 64th Regiment
8) **1849-50 :** Govindgarh Rebellion

1) The army of East India Company had two parts - one in which the soldiers and officers are Britishers and the other in which the commissioned officers were British, but soldiers and junior officers were Indians. Their pay was less than British soldiers and higher posts were closed for them.
2) Apart from this, even the smallest British officer used to insult the experienced and old Indian officer.
3) Sometimes due to misbehavior of the British, rebellion broke out in them.
4) The soldiers were ordered to shave off their beards, not to put tilak , and to wear a special type of hard round hat in place of the pagdi which had leather trumpet made of pig or cow skin
5) On 6 May 1806 a battalion revolted but was suppressed. The rebellion broke out again on July 10. Indian soldiers stood up and killed the sentries and about 100 British officers and soldiers were killed and the old Mysore flag was hoisted on the walls of the fort.

5.1.2) विद्रोह का विस्तार

1) ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियां

2) नई एनफील्ड राइफल व चर्बी वाला कारतूस

3) **29 मार्च 1857 :-** बैरकपुर छावनी की 34 वी रेजीमेंट के सैनिक मंगल पांडे द्वारा सार्जेंट ह्यूसन व लेफ्टिनेंट को गोली

4) **8 अप्रैल 1857 :-** मंगल पांडे को फांसी

5) **24 अप्रैल 1857 :-** मेरठ की घुड़सवार सेना ने कारतूस इस्तेमाल करने से मना किया

6) सभी को जेल(10वर्ष)

7) 10 मई 1857 मेरठ सैनिकों का खुला विद्रोह

8) **12 मई 1857 :-**
   - दिल्ली पर अधिकार
   - बहादुर शाह जफर को नेतृत्वकर्ता
   - सेनानायक - जनरल बख्त खां
   - कर्नल रिप्ले की हत्या

9) **20 सितंबर 1857 :-** हेनरी बर्नार्ड, विल्सन व जॉन निकलसन(मृत्यु) द्वारा दिल्ली पर पुनः अधिकार

10) **बहादुर शाह जफर :-** बर्मा - जीनतमहल के साथ(7 नवंबर 1862 को मृत्यु)

11) जफर के दो बेटों को लाल किले पर गोली मारी(हडसन द्वार)

12) बख्त खां की 1859 में मृत्यु

13) **मिर्जा गालिब :-** “यहां मेरे सामने रक्त का एक विशाल सागर है, केवल खुदा ही जानता है कि और क्या देखना बढ़ा है”

14) **लार्ड एलफिंस्टन :-** “ब्रिटिश सेना द्वारा दिल्ली का नरसंहार नादिरशाह के आक्रमण से भी भयावह था”

15) **कम भागीदारी :-** पंजाब, बंगाल, मद्रास, कश्मीर, राजपुताना, हैदराबाद, इंदौर के होलकर, ग्वालियर के सिंधिया, बड़ौदा के गायकवाड़, भोपाल, भोपाल, टीकमगढ़, हेनरी

5.1.2) Extension of the Rebellion

1) British colonial policies
2) New Enfield Rifle and Fat Cartridge
3) **29 March 1857 :-** Sergeant Hewson and Lieutenant shot by Mangal Pandey, soldier of 34th Regiment of Barrackpore Cantonment
4) **8 April 1857 :-** Mangal Pandey was hanged
5) **24 अप्रैल 1857 :-** Meerut's cavalry refused to use cartridges
6) All sent to jailed (10 years)
7) Open rebellion of Meerut soldiers on 10 May 1857
8) **12 May 1857 :-**
   - Right over Delhi
   - Bahadur Shah Zafar as leader
   - General - General Bakht Khan
   - Colonel Ripley's assasination
9) **20 September 1857 :-** Repossesion of Delhi by Henry Bernard, Wilson and John Nicholson (death)
10) **Bahadur Shah Zafar :-** Burma - With Jeenatmahal (died 7 November 1862)
11) Two sons of Zafar shot at the Red Fort (by Hudson)
12) Bakht Khan died in 1859
13) **Mirza ghalib :-** "यहां मेरे सामने रक्त का एक विशाल सागर है, केवल खुदा ही जानता है कि और क्या देखना बढ़ा है"
14) **Lord Elphinstone :-** "The massacre of Delhi by the British army is worse than the invasion of Nadir Shah."
15) **less involvement :-** Punjab, Bengal, Madras, Kashmir, Rajputana, Hyderabad, Holkar of Indore, Scindia of Gwalior, Gaekwad of Baroda, Bhopal, Bhopal, Tikamgarh, Henry

A) 1857 का विद्रोह : प्रमुख स्थल एवं नेता

अवधि	विद्रोह केंद्र	नेता	विद्रोह दमन
1) 11 मई, 1857-20 सितंबर, 1858ई	दिल्ली	बहादुरशाह द्वितीय	निकोलसन, हडसन लारेंस
2) 4 जून, 1857-1 मार्च, 1858 ई	लखनऊ	बेगम हजरत महल	कॉलिन कैम्पबेल
3) 5 जून, 1857- 15 मार्च, 1858 ई	कानपुर	नाना साहब	कैम्पबेल, हैवलॉक
4) 5 जून, 1857 - 4 अप्रैल, 1858 ई	झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
5) 20 जून, 1857 - 10 जून 1858 ई	इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
6) 2 जुलाई 1857 - 15 जून 1858 ई	बनारस	सेना, जनसाधारण	कर्नल नील
7) 15 जुलाई 1857 - 20 जून, 1858 ई	बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर
8) 20 जुलाई 1857 - 20 जून, 1858 ई	पंजाब सेना	जनसाधारण	जान लारेंस
9)	फतेहपुर	अजीमुल्ला	जनरल रेनॉर्ड
10)	फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	जनरल रेनॉर्ड
11)	बरेली	खान बहादुर खां, बख्त खाँ	विसेंट आयर

A) The Revolt of 1857: Major Sites and Leaders			
Period	**revolt centre**	**leader**	**Rebellion suppression**
1) May 11, 1857– September 20, 1858	Delhi	Bahadurshah II	Nicholson, Hudson
2) June 4, 1857–March 1, 1858	Lucknow	Begum Hazrat Mahal	Colin Campbell
3) June 5, 1857 – March 15, 1858	Kanpur	Nana Saheb	Campbell, Havelock
4) June 5, 1857 – April 4, 1858	Jhansi	Rani Lakshmibai	huroze
5) June 20, 1857 – June 10, 1858	Allahabad	Liyaqat Ali	Colonel Neill
6) 2 July 1857 - 15 June 1858 AD	Banaras	Army, General	Colonel Neill
7) July 15, 1857 – June 20, 1858	Bihar	Kunwar Singh	William Taylor
8) July 20, 1857 – June 20, 1858	Punjab Army	Janshadharan	John lawrence
9)	Fatehpur	azimullah	General Raynard
10)	Faizabad	Maulvi Ahmad Ullah	General Raynard
11)	Bareilly	Khan Bahadur Khan, Bakht Khan	Vicente air

1) लखनऊ और कानपुर के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में अन्य स्थानों पर भी विद्रोह का प्रसार हुआ जिसमें इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली के नेतृत्व में जून के प्रारंभ में विद्रोह हुआ तथा इसी समय बनारस में भी विद्रोही सक्रिय हो गए परंतु कर्नल नील द्वारा दोनों स्थानों पर विद्रोह को दबा दिया गया

2) इसी प्रकार फैजाबाद में मौलवी अहमद उल्ला ने भी जून 1857 में विद्रोह की अगवानी की। उन्होंने विभिन्न धर्मानुयायियों को जेहाद के नाम पर एकत्रित करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि "सारे लोग अंग्रेज काफिर के विरुद्ध खड़े हो जाओ और उन्हें भारत से बाहर खदेड़ दो।" अहमदउल्ला की कार्यवाहियों से त्रस्त होकर अंग्रेजों ने उस पर 50,000 रु0 का नकद इनाम घोषित कर दिया था फिर भी वे उसको जीवित न पकड़ सके। जनरल रेनार्ड ने 5 जून 1858 को विद्रोह को कुचल दिया और अहमदउल्ला को रुहेलखण्ड की सीमा पर पोवायाँ में गोली मार दी गयी

3) बरेली में खान बहादुर खाँ ने मोर्चा संभाला और शीघ्र ही समस्त रुहेलखण्ड विद्रोह की अग्नि में जल उठा, परन्तु 1858 में विंसेट आयर व कैम्पबेल ने,इस विद्रोह को दबा दिया और बहादुर खान को फांसी दे दी गयी।

4) मन्दसौर (म.प्र.) में मुगल घराने के शहजादे फिरोजशाह ने विद्रोह का नेतृत्व किया किंतु बाद में इन्हें रंगून निर्वासित कर दिया गया, जहां पर इनकी मृत्यु हो गयी

1) Apart from Lucknow and Kanpur, the rebellion spread to other places in Uttar Pradesh, in which there was a rebellion in early June under the leadership of Maulvi Liaquat Ali in Allahabad and at the same time the rebels became active in Banaras, but the rebellion was suppressed in both places by Colonel Neel.
2) Similarly, in Faizabad, Maulvi Ahmad Ullah also initiated the revolt in June 1857. He tried to unite various religious followers in the name of jihad. He said that "all the people should stand up against the British infidels and drive them out of India." Frustrated by the actions of Ahmadullah, the British had declared a cash reward of Rs 50,000 on him, yet they could not catch him alive. General Renard crushed the rebellion on 5 June 1858 and Ahmadullah was shot at Powayan on the border of Rohilkhand.
3) Khan Bahadur Khan took the responsibility of Bareilly and soon the whole of Rohilkhand was burnt in the fire of rebellion, but in 1858 Vincent Eyre and Campbell suppressed this rebellion and Bahadur Khan was hanged.
4) In Mandsaur (M.P.), the prince of the Mughal family, Firoz Shah, led the rebellion but was later exiled to Rangoon, where he died.

B) क्रांति के मुख्य नेतृत्वकर्ता

3) तात्या टोपे

2) नाना साहब (कानपुर)

4) रानी लक्ष्मीबाई

1) बेगम हजरत महल (लखनऊ)

5) वीर कुंवर सिंह

B) The main leader of the revolution

3) Tatya Tope

2) Nana Sahib (Kanpur)

4) Rani Laxmibai

1) Begum hazrat Mahal (Lucknow)

5) Veer Kunwar Singh

1) बेगम हजरत महल

1) अवध नवाब वाजिद अली शाह की बेगम
2) **4 जून 1857 :-** लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व
3) लखनऊ में आलमबाग की लड़ाई का नेतृत्व
4) **प्रमुख सहयोगी :-** राजा जयपाल सिंह,मौलवी अहमदुल्लाह व रहीमी बाई
5) 1858 में हैवलॉक व कैम्पवेल द्वारा लखनऊ में विद्रोह का दमन
6) **रसेल :-** उन्होंने पूरे अवध को उत्साहित कर दिया था
7) 1820 में फैजाबाद में जन्म
8) **अन्य नाम :-** महक परी
9) **मृत्यु :-** नेपाल, 1879

2) नाना साहब

1) पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र (मूल नाम - धोबू पंत)
2) **5 जून 1857 :-** कानपुर में 1857 की क्रांति का नेतृत्व
3) **सहयोगी :-** तात्या टोपे (सेनापति), अजीमुल्ला खां (क्रांति दूत)
4) **कारण :-** डलहौजी द्वारा1 पेशवा की उपाधि व पेंशन से इंकार
5) **मुख्य घटना :-** सत्तीचौरा कांड (अंग्रेजों की हत्या)
6) **दिसंबर 1857 :-** हैवलॉक व कैम्पवेल द्वारा विद्रोह का दमन
7) **मृत्यु :-** 1858, नेपाल

1) Begum Hazrat Mahal

1) Begum of Awadh Nawab Wajid Ali Shah
2) **4 June 1857 :-** Led the revolt of 1857 in Lucknow
3) Leading the Battle of Alambagh in Lucknow
4) **Major associates :-** king Jaipal Singh, Maulvi Ahmadullah and Rahimi Bai
5) Havelock and Campwell suppressed the revolt in Lucknow in 1858
6) **Russell :-** He had enthused the whole of Awadh.
7) Born in Faizabad in 1820
8) **other names :-** Mehak Pari
9) **Death :-** Nepal, 1879

2) Nana Saheb

1) Adopted son of Peshwa Bajirao II (original name - Dhobu Pant)
2) **5 June 1857 :-** Led the Revolution of 1857 in Kanpur
3) **Associates :-** Tatya Tope (Commander), Azimullah Khan (Revolutionary Ambassador)
4) **Reason :-** Refusal of title of Peshwa and pension by Dalhousie
5) **Major event :-** Sattichora scandal (British assassination)
6) **December 1857 :-** Havelock and Campwell suppressed the rebellion
7) **Death :-** 1858, Nepal

3) तात्या टोपे

1) 1857 की क्रांति के अग्रणी वीर व नाना साहब के सेनापति
2) **जन्म :-** 1814, नासिक
3) **मूल नाम :-** रामचन्द्र पांडुरंग
4) ईस्ट इंडिया कंपनी की बंगाल शाखा में तोपची
5) झांसी की रानी की सहायता करके ग्वालियर पर अधिकार
6) ग्वालियर के शासक जयाजी राव सिंधिया तथा ह्यूरोज द्वारा विद्रोह का दमन
7) छापामार युद्ध प्रणाली
8) अंग्रेजों द्वारा 50 हज़ार का इनाम
9) मानसिंह द्वारा विश्वासघात
10) **18 अप्रैल 1859 :-** शिवपुरी में तात्या टोपे को फांसी

4) रानी लक्ष्मीबाई

1) 5 जून 1857 में झांसी में क्रांति का नेतृत्व
2) **कारण :-** डलहौजी द्वारा हड़प नीति के तहत झांसी का विलय
3) 18 जून 1858 को ह्यूरोज से लड़ते हुए शहीद
4) **ह्यूरोज :-** विद्रोहियों में एकमात्र मर्द झांसी की रानी थी
5) **जन्म :-** वाराणसी 1828
6) **मूल नाम :-** मणिकर्णिका
7) **पति :-** गंगाधरराव निबालकर(1842)
8) **दत्तक पुत्र :-** दामोदर राव

3) Tatya Tope

1) The pioneer of the revolution of 1857 and the commander of Nana Saheb
2) **Birth:-** 1814, Nashik
3) **Original name:-** Ramchandra Pandurang
4) Artillery in the Bengal branch of the East India Company
5) With the aid of the queen of Jhansi, control of Gwalior
6) Suppression of rebellion by the ruler of Gwalior Jayaji Rao Scindia and **Hugh rose**
7) Guerilla warfare system
8) 50 thousand reward by the British
9) Betrayal by Mansingh
10) **18 अप्रैल 1859 :-** Tatya Tope hanged in Shivpuri

4) Rani Laxmibai

1) Leading the revolution in Jhansi on 5 June 1857
2) **Cause :-** Merger of Jhansi under the docyrine of lapse policy by Dalhousie
3) Martyr on 18 June 1858 while fighting with Harrows
4) **Hugh rose :-** Rani of Jhansi was the only male among the rebels.
5) **Birth :-** Varanasi 1828
6) **Original name:-** Manikarnika
7) **Husband:-** Gangadharrao Nibalkar(1842)
8) **Adopted son :-** Damodar Rao

5) कुंवर सिंह

1) जगदीशपुर (बिहार) में 80 वर्षीय कुंवर सिंह द्वारा 1857 की क्रांति का नेतृत्व
2) छापामार युद्ध प्रणाली
3) विलियम टेलर और आयर द्वारा विद्रोह का दमन
4) **मृत्यु :-** 1858 जगदीशपुर
5) **जन्म :-** 1777, भोजपुर (मालवा शासक भोज परमार के वंशज)

बिहार में दानापुर, आरा, पटना, गया, शाहाबाद (जगदीशपुर) एवं मुजफ्फरपुर आदि स्थान विद्रोह के प्रमुख केन्द्र बन गये। शाहाबाद में जगदीशपुर के जमींदार कुँवर सिंह (80 वर्षीय) ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया। कुँवर सिंह अंग्रेज अधिकारियों की सहायता से अपनी जमींदारी का प्रबंध बोर्ड ऑफ रेवेन्यू को सौंपना चाहते थे। परन्तु उनका यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ तथा गिरती आर्थिक स्थिति ने उन्हें दीवालियेपन की स्थिति में पहुँचा दिया। कुँवर सिंह ने सर्वप्रथम अपने जिला शाहाबाद को अंग्रेजी राज्य से मुक्त करवाया और वहाँ से आगे बढ़ते हुए आजमगढ़ जिले (उ.प्र.) में अतरौलिया पहुँचे जहाँ मिलमैन के नेतृत्व वाली अंग्रेजी सेना को हराया। कुँवर सिंह ने अपने विद्रोह का झण्डा बिहार से बाहर, मिर्जापुर, रीवा, बांदा तथा लखनऊ तक फहराया। कुँवर सिंह को पराजित करने के लिए मिलमैन व डेम्स की संयुक्त सेना भेजी गयी, परंतु वह भी पराजित हुई। पुनः कैनिंग ने मार्क के नेतृत्व में सेना भेजी। कुँवर सिंह ने इसे भी धूल चटा दिया, किंतु बांह में गोली लगने से वह घायल हो गये, गोली का जहर शरीर में न फैले इसलिए अपनी बांह को काटकर गंगा में अर्पित कर दिया तथा 22 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर पहुँच गये। वहाँ पर इन्होंने ली ग्रैण्ड के नेतृत्व में सिक्ख सेना को भी परास्त कर दिया। घायल होने के कारण 26 अप्रैल 1858 ई. को कुँवर सिंह की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के पश्चात् कुँवर सिंह के भाई अमर सिंह ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। अन्त में दिसम्बर 1858 में विलियम टेलर व विंसेट आयर ने बिहार के विद्रोह को सीमित कर दिया।

5) Kunwar Singh

1) The revolution of 1857 led by 80-year-old Kunwar Singh in Jagdispur (Bihar)
2) guerilla warfare system
3) Suppression of the Rebellion by William Taylor and Eyre
4) **Death:-** 1858 Jagdishpur
5) **Birth:-** 1777 , Bhojpur (Descendants of Malwa ruler Bhoj Parmar)

In Bihar, places like Danapur, Ara, Patna, Gaya, Shahabad (Jagdishpur) and Muzaffarpur became the main centers of rebellion. In Shahabad, Jagdishpur Zamindar Kunwar Singh (80 years old) led the rebels. Kunwar Singh wanted to hand over the management of his zamindari to the Board of Revenue with the help of the British officials. But his proposal was not accepted, and the deteriorating economic condition led him to a state of bankruptcy. Kunwar Singh first freed his district Shahabad from the British state and proceeding from there reached Atraulia in Azamgarh district (U.P.) where he defeated the English army led by Millman. Kunwar Singh raised the flag of his rebellion outside Bihar, up to Mirzapur, Rewa, Banda and Lucknow. A combined army of Millman and Dames was sent to defeat Kunwar Singh, but that too was defeated. Again, Canning sent an army under the leadership of Mark. Kunwar Singh also dusted it, but he was injured due to a bullet in the arm, so that the poison of the bullet did not spread in the body, he cut his arm and offered it to the Ganges and reached Jagdishpur on 22 April 1858. There he also defeated the Sikh army under the leadership of Le Grand. Kunwar Singh died on 26 April 1858 due to being injured. After his death, Amar Singh, brother of Kunwar Singh, continued the struggle against the British. Finally, in December 1858, William Taylor and Vincent Eyre put an end to the Bihar rebellion.

5.1.3) कारण || Cause

1) आर्थिक कारण

2) राजनीतिक व प्रशासनिक कारण

3) धार्मिक कारण

4) सामाजिक कारण

5) सैन्य कारण

6) तात्कालिक कारण

5.1.3) Cause

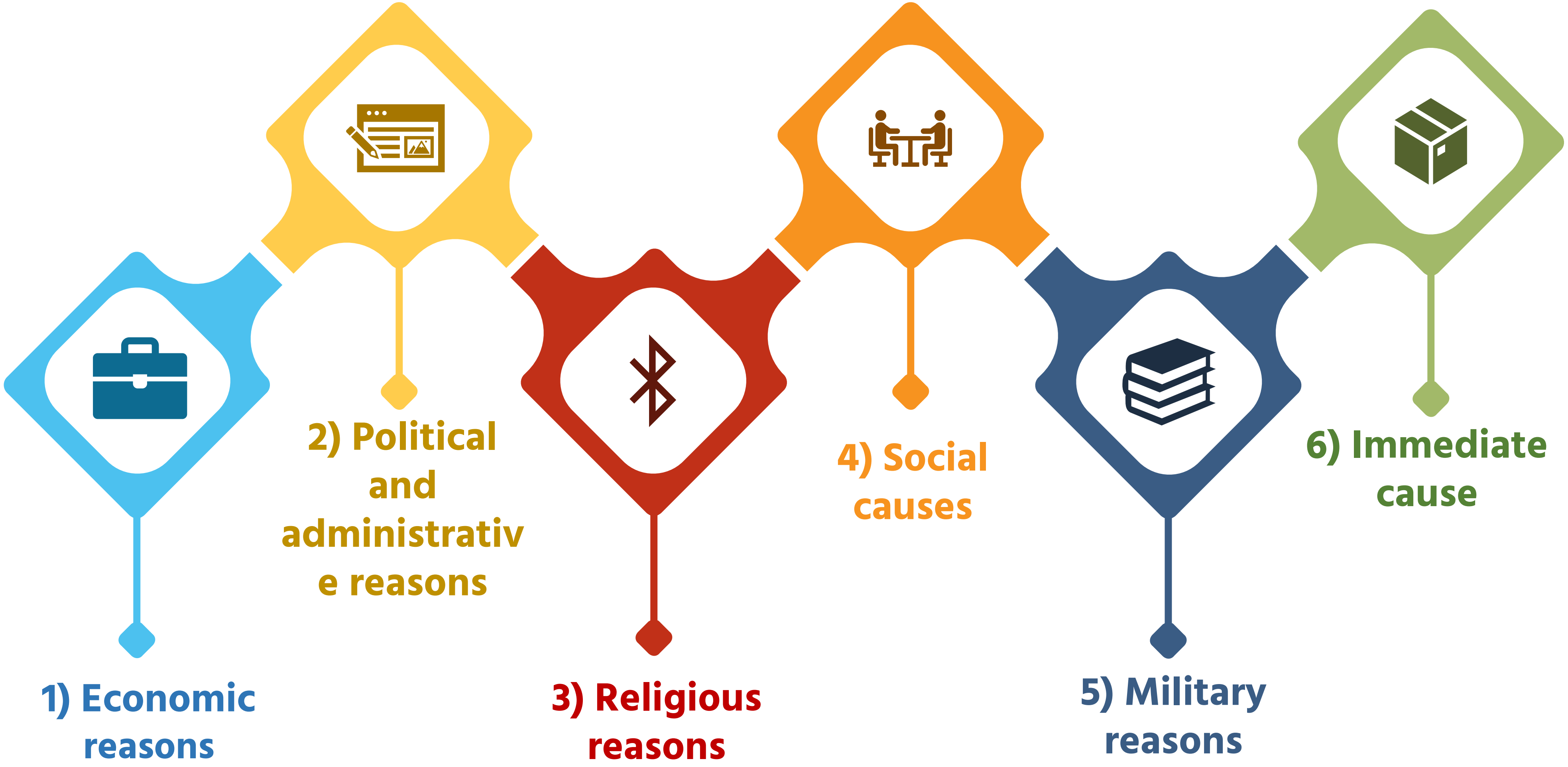
1) Economic reasons
2) Political and administrative reasons
3) Religious reasons
4) Social causes
5) Military reasons
6) Immediate cause

-: (1) आर्थिक कारण :-

1) भारतीय धन का निष्कासन

2) कठोर व दमनकारी भूराजस्व नीतियां

3) विऔधोगिकरण :- भारतीय कारीगर, शिल्पी आदि बेरोजगार

4) 1813 में एकतरफा मुक्त व्यापार व्यवस्था व कर विभेदीकरण(भारतीय वस्त्रों पर 71% तक आयात शुल्क)

5) न्यायालयों, साहूकारों व महाजनों द्वारा कृषक शोषण

6) ढाका, सूरत जैसे व्यापारिक केंद्रों का पतन

7) ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति हेतु भारत का बाजार रूपी प्रयोग

8) कृषि का वाणिज्यीकरण :- अकाल व भखमरी

-: (2) राजनीतिक व प्रशासनिक कारण :-

1) वेलेजली की सहायक सन्धि व्यवस्था ने रियासतों को पंगु बनाया

2) डलहौजी ने व्यपगत के सिद्धांत का प्रयोग करके सतारा, जैतपुर, झांसी आदि राज्यों का अनैतिक विलय

3) कुप्रशासन का आरोप लगाकर ब्रिटिश मित्र अवध रियासत का विलय

4) नाना साहेब की पेंशन व कर्नाटक, तंजौर, सूरत के राजाओं की उपाधियों का अंत

5) 1852 में ईनाम कमीशन की सिफारिशों के आधार पर 20000 जागीरों की जब्ती

6) विभेदकारी नियम व कानून :-

- नस्लीय सर्वोच्चता व विभेद
- फारसी के स्थान पर अंग्रेजी
- नवीन व जटिल न्यायिक व्यवस्था
- मुगल बादशाह का डलहौजी द्वारा अपमान
- कार्नवालिस द्वारा उच्च प्रशासनिक सेवाओं से भारतीय को वंचित रखने की नीति

-: (1) Economic reasons :-

1) Drain of Indian wealth
2) Supressive land revenue policies
3) Deindustrialization :- Unemployed Indian artisans, craftsmen etc.
4) Unilateral free trade system from 1813 and tax differentiation (import duty on Indian textiles up to 71%)
5) Farmer exploitation by courts, moneylenders
6) Decline of trading centers like Dhaka, Surat
7) India's use as market for Britain's industrial revolution
8) Commercialization of agriculture :- famine and starvation

-: (2) Political and administrative reasons :-

1) Wellesley's subsidiary alliance system paralyzed the princely states
2) Dalhousie made an immoral merger of the states of Satara, Jaitpur, Jhansi etc. by using the principle of lapse.
3) Merger of British friendly state Awadh princely state by maladministration
4) End of pension of Nana Saheb and the titles of the kings of Karnataka, Tanjore, Surat
5) In 1852, based on the recommendations of the Inam Commission, 20,000 jagirs were seized
6) **Discriminatory rules and regulations :-**
   - Racial supremacy and discrimination
   - English instead of Farsi
   - New and complex judicial system
   - Dalhousie insulted the Mughal emperor
   - Cornwallis' policy of depriving Indians from higher administrative

-: (3) धार्मिक कारण :-

1) ईसाई मिशनरी :-

- जबरन ईसाई धर्म में धर्मांतरण
- 1813 के अधिनियम द्वारा भारत में धर्म प्रचार की अनुमति
- भारतीय धर्म व परम्पराओं का तिरस्कार

2) 1850 का धार्मिक अयोग्यता(लेक्स लोकी) कानून द्वारा ईसाई धर्म अपनाने पैतृक सम्पत्ति का अधिकार मिलेगा

3) मंदिर, मस्जिद व अन्य धार्मिक संस्थानों पर कर

4) विद्यालयों में अनिवार्य बाइबिल शिक्षा

5) मेजर एडवर्ड :- "भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है"

-: (4) सामाजिक कारण :-

1) भारतीय सामाजिक परंपराओं में हस्तक्षेप

2) नस्लीय भेदभाव व भारत के प्रति हीन दृष्टिकोण

3) ब्रिटिश समाज सुधार नीतियों यथा सती प्रथा (1829), कन्या वध (1795), बाल विवाह, नरबलि प्रथा (1844) का दमन तथा विधवा पुनर्विवाह आदि का कट्टरपंथियों द्वारा विरोध

4) शिक्षा द्वारा पाश्चात्य संस्कृति व फैशन का प्रसार

-: (3) Religious reasons :-

1) Christian missionary :-
   - Forced conversion to Christianity
   - Propagation of religion in India was permitted by the Act of 1813.
   - Disrespect of Indian religions and traditions
2) The Lex Loci Act, gave the Christian converts the right to inherit their ancestral properties
3) Taxes on temples, mosques and other religious institutions
4) Mandatory Bible education in Schools
5) Major Edward :- "The ultimate aim of our right over India is to Christianize the country"

-: (4) Social reasons:-

1) Interference in Indian Social Traditions
2) Racial discrimination and inferior attitude towards India
3) British social reform policies such as the practice of Sati (1829), female slaughter (1795), child marriage, suppression of human sacrifice (1844) and widow remarriage etc. were opposed by the fundamentalists.
4) Spread of western culture and fashion through education

-: (5) सैन्य कारण :-

1) **नस्लीय व पारिश्रमिक भेदभाव :-**
   - यूरोपीय सैनिकों की तुलना में अत्यंत कम वेतन व सुविधाएं
   - पेंशन व पदोन्नति में भेदभाव (सर्वोच्च पद सूबेदार)
   - अंग्रेज सैनिकों द्वारा दुर्व्यवहार

2) ब्रिटिश सेना में प्रत्येक 6 में से 5 भारतीय सैनिक थे, जिनमें से 60% बंगाल, अवध व उत्तर प्रदेश से थे

3) हिंदुओं को तिलक, मुस्लिम को दाढ़ी व सिखों को पगड़ी की पाबंदी

4) 1854 के डाकघर अधिनियम द्वारा सैनिकों को प्राप्त निशुल्क डाक व्यवस्था की समाप्ति

5) 1856 के सामान्य सेना भर्ती अधिनियम(General Service Enlistment Act) द्वारा सैनिकों को समुद्र पार भी सेवा हेतु बुलाया जा सकता था जो हिंदू धार्मिक परंपरा के प्रतिकूल था

6) अफगान(1839-42) व क्रीमिया युद्ध में ब्रिटिश पराजय से ब्रिटिश अजेय छवि की समाप्ति

-: (6) तात्कालिक कारण :-

1) 1856 में ब्राउन बैस के स्थान पर नवीन एनफील्ड राइफल का प्रयोग

2) इस राइफल की कारतूस के ऊपरी भाग को मुंह से काटना पड़ता था जो गाय व सुअर की चर्बी से निर्मित था

3) भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावना आहत

4) मंगल पांडे द्वारा सार्जेंट बाग की हत्या

5) 10 मई 1857 को मेरठ में सैनिकों द्वारा क्रांति का आरंभ

-: (5) Military reason :-

1) **Racial and Remuneration Discrimination :-**
   - Very low pay and facilities compared to European soldiers
   - Discrimination in pension and promotion (highest post Subedar)
   - Misbehavior by British soldiers
2) The British army had 5 out of every 6 Indian soldiers ,
3) Restrictions on Tilak for Hindus, Beard for Muslims and Turban for Sikhs
4) Abolition of free post for soldiers by the Post Office Act of 1854
5) By the General Service Enlistment Act of 1856, soldiers could be called for service across the sea, which was against Hindu religious tradition.
6) British defeat in Afghan (1839–42) and Crimea war ended British invincible image

-: (6) Immediate cause :-

1) Use of the new Enfield rifle in place of Brown Bass in 1856
2) The upper part of the cartridge of this rifle, which was made of cow and pig fat.
3) Indian soldier's religious sentiments got hurt
4) Murder of Sergeant Bagh by Mangal Pandey
5) Revolution started by soldiers in Meerut on 10th May 1857

5.1.5) विद्रोह का स्वरुप

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है यूरोप इतिहासकार इस को एक सैनिक विद्रोह, मुसलमानों का ईसाइयों के विरुद्ध षड्यंत्र मानते हैं किंतु भारतीय इतिहासकार स्कोर भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति के संदर्भ में निम्न तर्क दिए गए हैं

01. सैनिक विद्रोह
02. मुस्लिम विद्रोह या हिंदू मुस्लिम षड्यंत्र
03. ईसाइयों के प्रति धर्म युद्ध
04. पुनर्स्थापनावादी
05. राष्ट्रीय विद्रोह
06. भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

5.1.5) Nature of Rebellion

There is a difference of opinion among scholars regarding the nature of first freedom struggle of 1857. Europe historians consider it a military revolt, a conspiracy of Muslims against Christians, but Indian historian consider it as India's first freedom struggle nature of the first freedom struggle of 1857. gave the following arguments

- 01 Military rebellion
- 02 Muslim Revolt or Hindu Muslim Conspiracy
- 03 Crusade against Christians
- 04 Restorationist
- 05 National rebellion
- 06 India's first freedom struggle

-: (1) सैनिक विद्रोह :-

1) **प्रतिपादक :-** साम्राज्यवादी इतिहास जैसे जॉन लारेंस, जॉन सीले, भारत सचिव अर्ल स्टेनले, सर सैय्यद अहमद खान, H.C. मुखर्जी आदि

2) **असत्यता के प्रमाण :-**

╙ तीन में से सिर्फ एक प्रान्तीय सेना द्वारा विद्रोह

╙ अनेक स्थानों पर मात्र जनता द्वारा विद्रोह

╙ मात्र एक चौथाई सैनिकों की भागीदारी

-: (2) मुस्लिम विद्रोह या हिंदू मुस्लिम षड्यंत्र :-

1) **प्रतिपादक :-** जेम्स आउट्रम, रॉबर्ट्स, कुपलैंड, टेलर आदि

2) **असत्यता के प्रमाण :-**

╙ हिंदू मुस्लिम एकता का प्रकटीकरण

╙ स्वेच्छा से बहादुरशाह जफर को सम्राट चुनना

╙ हिन्दू व मुस्लिम नेतृत्वकर्ता

-: (3) ईसाइयों के प्रति धर्म युद्ध :-

1) **प्रतिपादक :-** LER रीच

2) **असत्यता के प्रमाण :-**

╙ क्रांतिकारियों ने धर्म के आधार पर आव्हान नहीं किया

╙ कुछ हिन्दू मुस्लिम द्वारा ब्रिटेन का समर्थन

3) गुप्त विभाग के सचिव J. केयी ने इसे "काले लोगों का गोरों के प्रति विद्रोह" कहा

-: (4) पुनर्स्थापनावादी || Restorationist :-

1) **अर्थ :-** पुनर्स्थापना का व्यावहारिक अर्थ भारतीयों द्वारा उन सभी ब्रिटिश आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक नीतियों का विरोध करना था, जिनके द्वारा भारतीयों के परंपरागत रीति रिवाजों तथा प्रथाओं में हस्तक्षेप किया जा रहा था

2) **प्रतिपादक :-** पर्सिबल स्पीयर

3) **प्रमाण :-**

-: (1) Military rebellion:-

1) **Propounder :-** Imperialist histories such as John Lawrence, John Seeley, India Secretary Earl Stanley, Sir Syed Ahmed Khan, H.C Mukherjee etc

2) **Argument in opposition :-**

- Rebellion by only one of the three provincial forces
- Rebellion by people only in many places
- Participation only a quarter of the soldiers

-: (2) Muslim Revolt or Hindu Muslim Conspiracy :-

1) **Propounder :-** James Outram, Roberts, Coupland, Taylor

2) **Argument in opposition :-**

- Manifestation of Hindu Muslim Unity
- Voluntarily electing Bahadur Shah Zafar as emperor
- Hindu and Muslim leaders

-: (3) Crusade against Christians :-

1) **Propounder :-** LER Reach

2) **Argument in opposition :-**

- Revolutionaries did not call on the basis of religion
- Britain was supported by some Hindu Muslim

3) Secret Department Secretary J. Kaye called it "the rebellion of black people against whites".

-: (4) Restorationist :-

1) **Meaning :-** The practical meaning of restoration was to oppose all British economic, social and cultural policies by Indians, which were interfering with the traditional customs and practices of Indians.

2) **Propounder :-** Percival Spear

3) **Argument in favor :-**

- Choosing a Mughal Emperor as Emperor
- Opposition of British social policies

- मुगल बादशाह को सम्राट चुनना
- ब्रिटिश सामाजिक नीतियों का विरोध

-: (5) राष्ट्रीय विद्रोह :-

1) **प्रतिपादक :-** बेंजामिन डिजरायली, अशोक मेहता

2) **पक्ष में तर्क :-**

- क्रांति का लक्ष्य ब्रिटिश शासन की समाप्ति व भारतीय शासन की स्थापना
- विद्रोह का क्षेत्रीय प्रसार व व्यापक जनभागीदारी

3) **विपक्ष में तर्क :-**

- जनसाधारण व नेतृत्वकर्ता के लक्ष्यों व प्रवृत्तियों में अंतर
- सांझा राष्ट्रीय हित के स्थान पर क्षेत्रीय / निजी हितों हेतु संघर्ष
- अधिकांश जनमानस व रजवाड़ों की तटस्थता

-: (6) भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम :-

1) **प्रतिपादक :-** विनायक दामोदर सावरकर(पुस्तक - द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस, 1857)

2) **समर्थक :-** पट्टाभि सीतारमैया, डॉ एस एन सेन

3) **पक्ष में तर्क :-**

- क्रांतिकारियों द्वारा चपाती व कमल के फूल द्वारा में प्रचार - प्रसार
- क्रांति का एक सांझा उद्देश्य - भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति
- हिन्दू - मुस्लिम एकता
- जन साधारण की भागीदारी
- किसान, मजदूर, दस्तकार आदि की भागीदारी
- डॉ एस एन सेन - राष्ट्रीयता के अभाव में भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम
- बहादुरशाह जफर व नाना साहेब का देशी रजवाड़ों को पत्र व्यवहार

-: (5) National Rebellion :-

1) **Propounder :-** Benjamin Disraeli, Ashok Mehta

2) **Argument in favor :-**
   - The goal of the revolution was the end of British rule and the establishment of Indian rule.
   - Public participation and widespread of the rebellion

3) **Argument in opposition :-**
   - Difference between the goals and attitudes of the general public and the leader
   - Struggle for regional/private interests in place of common national interest
   - Neutrality of majority and princely states

-: (6) India's first freedom struggle :-

1) **Propounder :-** Vinayak Damodar Savarkar (Book - The Indian War of Independence, 1857)

2) **Supporter :-** Pattabhi Sitaramayya, Dr S N Sen

3) **Argument in favor :-**
   - Propaganda by revolutionaries through chapati and lotus flowers
   - A Common Objective of Revolution - End of British Rule from India
   - Hindu-Muslim Unity
   - public participation
   - Participation of farmers, laborers, artisans etc.
   - Dr. SN Sen - Indian freedom struggle even in the absence of nationality
   - Correspondence of Bahadur Shah Zafar and Nana Saheb to the native princes

4) विरोध :- आर सी मजूमदार ने कहा है कि "यह तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था, न राष्ट्रीय, न ही स्वतंत्रता संग्राम।

5) बहस :-

- इस विद्रोह ने अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग रूप धारण किए।
- यह पंजाब और मध्य प्रदेश में एक सैन्य विद्रोह था, फिर इसने उत्तर प्रदेश और बिहार के पश्चिमी हिस्सों में एक जन आंदोलन का रूप ले लिया।
- राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे कुछ हिस्से ऐसे क्षेत्र थे जहां लोगों ने विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति तो जताई लेकिन कानून की सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया।
- इस विद्रोह का राष्ट्रीय महत्व प्रत्यक्ष और तात्कालिक था

6) निष्कर्ष :- उपरोक्त उदाहरणों की चर्चा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यह विद्रोह एक राष्ट्रीय विद्रोह था क्योंकि इसमें सैनिकों के साथ-साथ आम लोगों ने भी भाग लिया था।

4) **Oppose :-** R. C. Mazumdar said that "this so-called First National War of Independence was neither the First, nor the National, nor the War of Independence

5) **Argument :-**

- This rebellion took different forms at different places.
- This was a military rebellion in Punjab and Madhya Pradesh, then it took the form of a mass movement in the western parts of Uttar Pradesh and Bihar.
- Some parts such as Rajasthan and Maharashtra were areas where the people sympathized with the rebels but did not violate the limits of the law.
- The national importance of this rebellion was direct and immediate

6) **Conclusion : -** From the discussion of the above examples, we conclude that this rebellion was a national rebellion because along with the soldiers, common people also participated in it.

1857 के विद्रोह का स्वरूप

इतिहासकार / विद्वान	विद्रोह का स्वरूप
के. मालेसन, ट्रेबिलियन, सर जान लारेंस व सीले, सर सैयद अहमद खाँ	यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था
डॉ. ईश्वरी प्रसाद	यह स्वतंत्रता संग्राम था।
मिस्टर के, एस.बी. चौधरी	एक सामंतवादी प्रतिक्रिया थी
डा. रामविलास शर्मा, डफ, मालेसन	जनक्रांति थी
बेन्जामिन डिजरेली, अशोक मेहता	यह 'राष्ट्रीय विद्रोह' था
जेम्स आउट्रम, डब्लू टेलर	अंग्रेजों के विरुद्ध, 'हिंदू-मुस्लिम षड्यंत्र' था
एल. आर. रीस	'ईसाईयों के विरुद्ध धर्मयुद्ध था
सर जे. केयी	'श्वेतों के विरुद्ध काले लोगों का संघर्ष' कहा।
रार्बट्स एवं श्रीमती कूपलैण्ड	'मुस्लिम विद्रोह' कहा।

1857 के विद्रोह का स्वरूप

इतिहासकार / विद्वान	विद्रोह का स्वरूप
पर्सिवल स्पीयर	'प्राचीन पुरातनवाद भारत का अंतिम प्रयास'
टी. आर. होम्स	'सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष' था।
वीर सावरकर, पट्टाभि सीता रमैया	यह 'सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम था।
कार्ल मार्क्स	1857 को एक 'राष्ट्रीय क्रान्ति' कहा।
आर. सी. मजूमदार	"तथाकथित प्रथम स्वतंत्रता संग्राम न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था।"
पी. राबर्ट्स	1857 का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह था जिसका तत्कालिक कारण चर्बीयुक्त कारतूस था
डा. एस. एन सेन	यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।

Nature of Revolt of 1857

Historian / scholar	Form of rebellion
K. Maleson, Trebillion, Sir John Lawrence and Seeley, Sir Syed Ahmed Khan	it was a complete sepoy mutiny
Dr. Ishwari Prasad	It was a freedom struggle.
Mr. K,S.B. Chowdhry	There was a feudal response
Dr. Ram Vilas Sharma, Duff, Maleson	There was a people's revolution
Benjamin DeGenerli, Ashok Mehta	It was a 'national uprising'
James Outrum, W. Taylor	Against the British, there was a 'Hindu-Muslim conspiracy'
L. R. Reiss	'There was a crusade against christians.
Sir J. Kaye	"The struggle of black people against the whites" said.
Roberts & Mrs. Coupland	"Muslim rebellion" said.

Nature of Revolt of 1857

Historian / scholar	Form of rebellion
Persival spear	'Ancient antiquity india's last attempt'
T. R. Holmes	It was a 'struggle of civilization and barbarism'.
Veer savarkar, pattabhi sita ramaiah	It was a 'well-planned freedom struggle'.
Karl marx	1857 was called a 'national revolution'.
R. C. Majumdar	"The so-called first war of independence was neither the first, nor the national, nor the war of independence.
P. Roberts	The revolt of 1857 was a military mutiny whose immediate cause was greased cartridges.
Dr. S. N. Sen	This rebellion was a freedom struggle in the absence of nationalism.

1857 के विद्रोह पर प्रमुख पुस्तकें

लेखक	चर्चित पुस्तकें
आर.सी. मजूमदार	द सिपोय म्यूटनी एण्ड दि रिवोल्ट ऑफ 1857
एस.एन. सेन	1857 (अठारह सौ सत्तावन)
एस.बी. चौधरी	थ्योरीज आफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857 तथा सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्यूटिनीज 1857-59
ऐरिक स्टोक्स	पीजेन्ट एण्ड द राज
पी.सी. जोशी	रिबेलियन 1857
वी.डी. सावरकर	फर्स्ट वार ऑफ इण्डियन इंडिपेण्डेंस
टी.आर. होम्स	हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी
जी.बी. मालसेन	इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857

1857 के विद्रोह पर प्रमुख पुस्तकें

लेखक	चर्चित पुस्तकें
अशोक मेहता	द ग्रेट रिबेलियन
जे.डब्ल्यू.के.	ए हिस्ट्री ऑफ द सिपॉय वार इन इंडिया
ए.पी. चट्टोपाध्याय	द सिपॉय म्यूटिनी ऑफ 1857; ए सोशल स्टडी एण्ड एनेलिसिस
के. के. सेनगुप्त	रीसेन्ट राइटिंग्स ऑन द रिवोल्ट ऑफ 1857
सैयद अहमद खाँ	असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द (भारतीय भाषा में विद्रोह की प्रथम पुस्तक) व द कॉज़ेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट

Major Books on the Revolt of 1857

Author	Popular books
R.C. Majumdar	The Sipoy Mutiny and the Revolt of 1857
S.N. Sen	1857 (Eighteen hundred fifty-seven)
S.B. Chowdary	Theories of the Indian Mutiny, 1857 and the Civil Rebellion in the Indian Mutisms 1857-59
Eric Stokes	peagent and the Raj
P.C Joshi	rebellion 1857
V.D. Savarkar	First War of Indian Independence
T.R. Holmes	History of Indian Mutiny
G.B. Malsen	Indian Mutiny of 1857

Major Books on the Revolt of 1857

Author	Popular books
Ashok Mehta	The Great Rebellion
J.W.K.	A History of the Sipoy War in India
A.P. Chattopadhyay	Sipoy Mutilini of 1857; A Social Study and Analysis
K. K. Sengupta	Reissant Writings on the Revolt of 1857
Syed Ahmad Khan	Asbab-e-Bagavat-Mutiny-e-Hind (The first book of the rebellion in the Indian language) and The Cause of the Indian Revolt

5.1.6) विद्रोह की असफलता के कारण

1) **निश्चित उद्देश्य का अभाव :-** सांझा राष्ट्रीय उद्देश्य के स्थान पर निजी उद्देश्य जैसे नाना साहब पेंशन हेतु, सैनिक समानता हेतु आदि

2) **संगठन का अभाव :-**

- मजबूत केंद्रीय संगठन का अभाव
- क्रांति में निश्चित योजना का अभाव - विद्रोह 31 मई 1857 को आरंभ होना था, किंतु 10 मई को ही हो गया

3) **देसी रियासतों व सामंतों का ब्रिटिश शासन को समर्थन :-**

- पटियाला, ग्वालियर, हैदराबाद आदि के राजा और सामंतों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों का सहयोग दिया।
- **कैनिंग :-** "यदि सिंधिया भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए तो मुझे कल ही भारत छोड़ना पड़ेगा"
- विद्रोह के दमन के पश्चात इन भारतीय राजाओं को पुरस्कृत किया गया

4) **कुशल नेतृत्व का अभाव :-**

- बहादुर शाह और नाना साहब कुशल संगठनकर्ता थे परंतु उनमें सैन्य नेतृत्व क्षमता की कमी थी
- तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह के नेतृत्व को अखिल भारतीय मंच ना मिलना

5) **आधुनिक हथियार व प्रौद्योगिकी का अभाव :-**

- भारतीयों के पास आधुनिक वस्तुओं का अभाव
- नाना साहब - "यह नीली टोपी वाली राईफ़ल तो गोली चलने से पहले मार देती है"।
- आवागमन व संचार के साधनों पर अंग्रेजों का अधिकार

6) **शिक्षित वर्ग की उदासीनता :-** यदि इस वर्ग ने लेखों और भाषणों द्वारा लोगों में उत्साह का संचार किया होता तो निसंदेह विद्रोह का परिणाम कुछ और होता

5.1.6) Reasons for the failure of the rebellion

1) **Lack of definite purpose :-** Instead of common national purpose, personal purpose like Nana Saheb for pension, for military equality etc.

2) **lack of organization :-**

- Lack of strong central organization
- Lack of definite plan in the revolution - The revolt was to begin on 31 May 1857, but took place only on 10 May

3) **Support of the princely states and feudatories to the British rule :-**

- The kings and feudatories of Patiala, Gwalior, Hyderabad etc. supported the British in suppressing the rebellion.
- **Canning** :- "If Scindia also joins the rebellion, then I will have to leave India tomorrow"
- These Indian kings were rewarded after the suppression of the rebellion

4) **Lack of efficient leadership :-**

- Bahadur shah and nana saheb were skilled organizers but lacked military leadership
- The leadership of tatya tope, rani laxmibai, kunwar singh did not get a pan-india platform

5) **Lack of modern weapons and technology :-**

- Indian lack of modern goods
- Nana saheb - "this blue-capped rifle kills before it shoots".
- British right on the means of transport and communication

6) **Apathy of the educated class :-** if this class had infused enthusiasm among the people through articles and speeches, then undoubtedly the result of the rebellion would have been different.

निष्कर्ष :- इस प्रकार 1857 के विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण सीमित विस्तार, सभी वर्गों का समर्थन ना होना, ब्रिटिश सैन्य सर्वोच्चता, साधनों का अभाव व शिक्षित वर्ग की उदासीनता थी जिसके कारण आंदोलन का कुशलता से नेतृत्व नहीं किया जा सका और यह अपने तात्कालिक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका किंतु इसके दूरगामी परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण रहे

5.1.7) विद्रोह का महत्व

1) 1857 के विद्रोह ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित कर राष्ट्रीय भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया
2) विद्रोह की असफलता से यह स्पष्ट हो गया था कि केवल सेना एवं शक्ति के बल पर ही ब्रिटिशों मुक्ति संभव नहीं है इसके लिए सभी वर्गों का सहयोग समर्थन एवं राष्ट्रीय भावना का होना आवश्यक था
3) विद्रोह के दौरान भारतीयों को रूस, तुर्की, ईरान, ब्रिटेन के चार्टिस्ट आंदोलन के नेता एवं चीन के ताइपिंग विद्रोहियों के नेताओं से सहानुभूति एवं मानसिक समर्थन मिला था इससे भारतीयों में अंग्रेजों के विरोध की इच्छा प्रबल होती गई
4) राजनीति जागृति आई एवं व्यापक संगठन की प्रेरणा प्राप्त हुई 1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन को एक निश्चित दिशा मिल गई

Conclusion :- Thus, the main reasons for the failure of the Revolt of 1857 were limited expansion, lack of support from all sections, British military supremacy, lack of resources and apathy of the educated class, due to which the movement could not be efficiently led and it could not achieve its immediate goal. could not achieve but its far-reaching consequences were very important

5.1.7) Importance of rebellion

1) The revolt of 1857 made a significant contribution to the development of national spirit by organizing India as a nation.
2) The failure of the rebellion made it clear that the liberation of the British was not possible only on the strength of army and power, for this it was necessary to have the support and national spirit of all sections.
3) During the rebellion, the Indians had received sympathy and mental support from the leaders of the Chartist movement of Russia, Turkey, Iran, Britain and the leaders of the Taiping rebels of China.
4) Political awakening came and the inspiration of wider organization was received. With the establishment of the Indian National Congress in 1885, the national movement got a definite direction.

5.1.8) विद्रोह का परिणाम / प्रभाव

1857 का विद्रोह असफल रहा किंतु इसके निम्नलिखित दूरगामी परिणाम हुए :-

1) भारत सरकार अधिनियम 1858 द्वारा कंपनी शासन का अंत तथा ब्रिटिश क्राउन शासन की शुरुआत

- **घोषणा -** 1 नवंबर 1858, लार्ड कैनिंग
- शासन संचालन हेतु ब्रिटेन में भारत सचिव व 15 सदस्यीय समिति का गठन
- गवर्नर जनरल का वायसराय(क्राउन का प्रतिनिधि) के रूप में परिवर्तन(प्रथम - लॉर्ड कैनिंग)

2) देसी रियासतों के प्रति उदार नीति :-

- विलय नीतियों (व्यपगत आदि) का त्याग
- सभी राजा, ब्रिटिश ताज के अधीन

5) आर्थिक नीतियों में परिवर्तन :-

- सरकारी खर्च में कटौती व 300 से अधिक वार्षिक आय वालों पर आयकर
- रेल व्यवस्था, सिंचाई आदि में निवेश

5) उदारवादी नीतियां व 1861 का अधिनियम :-

- महारानी विक्टोरिया कैसर ए हिन्द की उपाधि धारण की(1876)
- सिविल सेवा हेतु प्रतियोगी परीक्षा

6) पील आयोग की सिफारिश पर सेना का पुनर्गठन :-

- भारतीयों की संख्या में कमी
- बंगाल में दो भारतीयों पर एक यूरोपीय सैनिक
- महत्वपूर्ण पदों से भारतीय वंचित
- सिख, गोरखा तथा पठान सैन्य वर्गों को पुरस्कृत किया गया

8) अन्य प्रभाव :-

- जातीय भेदभाव व सांप्रदायिकता को बढ़ावा
- फूट डालो और राज करो की नीति
- राष्ट्रीय भावनाओं व राष्ट्रीय आंदोलन का प्रादुर्भाव
- भारतीयों के सामाजिक धार्मिक जीवन में अहस्तक्षेप की नीति
- भारत से मुगल सम्राट का अंत

5.1.8) Consequence/Effect of Rebellion

The revolt of 1857 was unsuccessful, but it had the following far-reaching consequences :-

1) Government of India Act 1858

- **Declaration -** 1 November 1858, Lord Canning
- End of Company rule & beginning of British Crown rule
- India Secretary and 15-member department formed in UK for governance in India.

2) Change of Governor General as Viceroy (representative of the Crown) (1st - Lord Canning)

3) liberal policy towards princely states :-

- Abandonment of merger policies like doctrine of lapse
- All kings under the British crown

5) Liberal policies and act of 1861 :-

- Queen Victoria assumed the title of kaiser-e-hind(1876)
- Allowed Indians in Civil services competitive exam

5) Reorganization of army on the recommendation of peel commission :-

- Decrease in the number of Indians
- Indians deprived of important posts
- Sikh, gorkha and pathan regiments were rewarded

6) Change in economic policies :-

- Cuts on Government spending and income tax on those with an annual income above 300
- Investment in railway system, irrigation etc.

8) Other effects :-

- Caste discrimination and communalism
- Divide and rule policy
- Policy of non-interference in the socio-religious life of Indians
- The emergence of national sentiments and national movement
- The end of the Mughal emperor from India

5.1.9) 1857 की क्रांति में महिलाओं की भूमिका

1857 की क्रान्ति में पुरुषों का ही नहीं बल्कि महिलाओं का भी महान योगदान था, जिनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, झलकारीबाई तथा अवंतीबाई प्रमुख थीं।

1) **लक्ष्मीबाई** :- झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई झाँसी राज्य की शासक बनीं। उस समय लक्ष्मीबाई की उम्र 18 वर्ष की थी, उन्होंने यह घोषणा की कि, "**मैं झाँसी अंग्रेजों को नहीं दूंगी**।" 1857 की मेरठ क्रान्ति की चिंगारी झाँसी तक पहुँची। रानी ने अंतिम समय तक अंग्रेजों से संघर्ष किया, उन्होंने अंग्रेजों की अधीनता कभी भी स्वीकार नहीं की। लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना भारत का गौरव थीं।

2) **अवंतीबाई** :- मण्डला के जागीरदार राव गुलजार सिंह की पुत्री थीं। उनका विवाह रामगढ़ के राजा विक्रमजीत से हुआ। सन् 1851 में राजा साहब की मानसिक विक्षिप्तता तथा पुत्र की अल्पवयस्कता को दृष्टिगत कर कम्पनी शासन ने अपना प्रतिनिधि यहाँ नियुक्त कर दिया। 1857 की क्रान्ति की चिंगारी रामगढ़ तक फैली। विजयदशमी के दिन रानी ने अंग्रेजों को मार भगाया और मण्डला पर अधिकार कर लिया। 15 जनवरी, 1858 ई. को सेनापति वेडिंग्टन को पराजित किया। 31 मार्च, 1857 को अंग्रेजी सेना ने रामगढ़ पर आक्रमण किया। पराजय के पूर्व बाएँ हाथ में गोली लगी। रानी ने पेट में तलवार घोंप कर आत्महुति दे दी।

3) **झलकारीबाई** का जन्म 22 नवम्बर, 1830 ई. में ग्राम भोजला में हुआ तथा उनका विवाह पूरनकोरी से हुआ। उसमें दुर्गादल के प्रशिक्षक से शस्त्र चलाना सीखा। उसने रानी लक्ष्मीबाई की जान बचाने हेतु स्वयं रानी का वेश धारण कर अंग्रेजों को छकाया तथा आत्महुति दे दी।

5.1.9) Role of Women in the Revolt of 1857

There was a great contribution not only of men but also of women in the revolt of 1857, in which Jhansi's Rani Laxmibai, Jhalkari Bai and Avantibai were prominent. I

1) **Laxmi Bai** :- After the death of Raja Gangadhar Rao of Jhansi, his wife Lakshmibai became the ruler of Jhansi state. When Lakshmibai was 18 years old at that time, she declared that **"I will not give Jhansi to the British."** The spark of the Meerut Revolution of 1857 reached Jhansi. The queen fought with the British till the last time, she never accepted the suzerainty of the British. A heroine like Lakshmi Bai was the pride of India.
2) **Avantibai** :- She was the daughter of Rao Gulzar Singh, the Jagirdar of Mandla. She was married to Raja Vikramjit of Ramgarh. In the year 1851, keeping in view the mental derangedness of Raja Saheb and the son's youth, the Company Government appointed its representative here. The spark of the revolt of 1857 spread till Ramgarh. On the day of Vijayadashami, the queen killed the British and occupied Mandla. On January 15, 1858 AD, General Waddington was defeated. On March 31, 1857, the British army attacked Ramgarh. He was shot in the left hand before the defeat. The queen committed suicide by stabbing her in the stomach.
3) **Jhalkari bai** was born on November 22, 1830 in village Bhojla and was married to Purankori. He learned to operate weapons from the instructor of Durga Dal. To save the life of Rani Laxmibai, she disguised herself as a queen, tricked the British and committed suicide.

5.1.10) अन्य तथ्य

1) डॉ. एस.एन. सेन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सरकारी इतिहासकार थे
2) डॉ. एस.एन. सेन ने कहा था कि गर्मी की आंधी की भांति मेरठ का विद्रोह अप्रत्याशित और अल्पकालिक था
3) **द ग्रेट रिबेलीयन** नामक पुस्तक अशोक मेहता ने लिखी
4) डॉ. एस. बी. चौधरी ने 1857 के विद्रोह को **सामंती क्षोभ** कहा था
5) सर सैयद अहमद खान भारतीय भाषा में 1857 के विद्रोह के कारणों पर लिखने वाले प्रथम भारतीय थे
6) मौलवी लियाकत अली ने इलाहाबाद में विद्रोहियों का नेतृत्व किया
7) काले खान ने झांसी में विद्रोह का प्रारंभिक नेतृत्व किया था
8) खान बहादुर खा ने बरेली के विद्रोह का नेतृत्व किया
9) मंगल पांडे गाजीपुर(बलिया)(UP) के निवासी थे
10) कुंवर सिंह की मृत्यु के पश्चात बिहार के विद्रोह का नेतृत्व भाई अमर सिंह ने किया
11) 1857 के विद्रोह के दौरान कुंवर सिंह को **"बिहार का सिंह"** की उपाधि दी गयी
12) जनरल विंडहम को 1857 में विद्रोही सैनिकों ने कानपुर के निकट पराजित किया था
13) असम में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व मनीराम दत्त व कंदपरेश्वर ने किया
14) उड़ीसा में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संबलपुर की राजकुमार सुरेंद्रशाही और उज्जवल शाही ने विद्रोह किया
15) राधेकृष्ण दंड सेना के नेतृत्व में 18 57 का विद्रोह गंजाम उड़ीसा में हुआ
16) राजा प्रताप सिंह और भाई वीर सिंह 1857 के विद्रोह(कुल्लू की पहाड़ियों में) से संबंधित है

5.1.10) Other Fact

1) Dr. SN Sen was the official historian of the Indian independence movement
2) Dr. SN Sen had said that the Meerut rebellion was unpredictable and short-lived like a summer storm.
3) Ashok Mehta wrote the book **The Great Rebellion**
4) Dr. S. B. Chowdhary called the revolt of 1857 a **feudal rage.**
5) Sir Syed Ahmed Khan was the first Indian to write in Indian language on the reasons of the Revolt of 1857.
6) Maulvi Liaquat Ali led the rebels in Allahabad
7) Kale Khan was the initial leader of the rebellion in Jhansi.
8) Khan Bahadur Khan led the revolt of Bareilly
9) Mangal Pandey was a resident of Ghazipur (Ballia) (UP)
10) After the death of Kunwar Singh, the rebellion of Bihar was led by Bhai Amar Singh.
11) During the Revolt of 1857, Kunwar Singh was given the title of **"Singh of Bihar".**
12) General Windham was defeated in 1857 by rebel troops near Kanpur.
13) Maniram Dutta and Kandapareshwar led the revolt of 1857 in Assam.
14) Rajkumar Surendra Shahi and Ujjwal Shahi of Sambalpur revolted against British power in Orissa.
15) The revolt of 1857 led by Radhekrishna DandSena took place in Ganjam, Orissa.
16) Raja Pratap Singh and Bhai Vir Singh is related to the Revolt of 1857 (in the hills of Kullu)

17) राजस्थान के कोटा में विद्रोह का नेतृत्व जयदयाल और हरदयाल ने किया

18) महाराष्ट्र में 1857 के विद्रोह के लिए रंगो बापूजी ने आम व्यक्तियों की सेना बनाई

19) अरनागिरी व कृष्ण ने 1857 में मद्रास विद्रोह का नेतृत्व किया

20) मध्यप्रदेश के मंदसौर में विद्रोह का झंडा शाहजादा फिरोजशाह ने बुलंद किया

21) ग्वालियर एक ऐसी देसी राज्य था जिसे अंग्रेजों ने उसकी प्रदेश तथा पेंशन से वंचित नहीं किया

22) 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा तात्या टोपे को **इटली का गेरी बाल्डी** उपमा प्रदान की गई

23) 1806 में वेल्लोर क्रांति को 1857 की क्रांति का पूर्वाभ्यास कहा जाता है

24) **कोजेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट** सर सैयद अहमद खान की कृति है

25) इंडियन काउंसिल एक्ट, इंडियन हाई कोर्ट एक्ट तथा इंडियन सिविल सर्विस एक्ट वायसराय कैनिग के समय में 1861 में पारित हुआ

26) तात्या टोपे का वास्तविक नाम **रामचंद्र पांडुरंग** था

27) 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का जोधपुर की संयुक्त सेना को परास्त करने वाले आउवा के ठाकुर कुशल सिंह थे

28) मिर्जा गालिब ने दिल्ली में 1857 के विद्रोह को अपनी आंखों से देखा

29) अंतिम मुगल बादशाह अकबर बेगम जीनत महल के साथ रंगून निर्वाचित किया गया

30) 1857 के विद्रोह के समय लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को अपना मुख्यालय बनाया

31) झांसी के सिपाहियों और अफसरों को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह के लिए लक्ष्मण राव ने उकसाया

17) Jaidayal and Hardayal led the rebellion in Rajasthan's Kota

18) Rango Bapuji formed an army of common people for the revolt of 1857 in Maharashtra.

19) Arnagiri and Krishna led the Madras Rebellion in 1857

20) Shahzada Firoz Shah raised the flag of rebellion in Mandsaur, Madhya Pradesh

21) Gwalior was such a native state that the British did not deprive him of his state and pension.

22) Tatya Tope, a warrior of the 1857 freedom struggle, was given the **Gerry Baldi analogy of Italy**

23) The Vellore Revolution of 1806 is said to be a rehearsal of the Revolution of 1857.

24) Cause of the Indian Revolt is a composition of Sir Syed Ahmed Khan

25) The Indian Council Act, the Indian High Court Act and the Indian Civil Service Act were passed in 1861 during the time of Viceroy Canning.

26) Tatya Tope's real name was **Ramchandra Pandurang.**

27) Thakur Kushal Singh of Auwa was the one who defeated the joint army of Jodhpur in the revolt of 1857.

28) Mirza Ghalib witnessed the revolt of 1857 in Delhi

29) Last Mughal Emperor Akbar Begum was elected Rangoon along with Zeenat Mahal

30) Lord Canning made Allahabad his headquarters during the Revolt of 1857.

31) Lakshman Rao instigated the soldiers and officers of Jhansi to revolt against the British

32) 1857 के विद्रोह के नेता नानासाहेब थे जिन्होंने विद्रोह के दौरान फ्रांस के नेपोलियन तृतीय को तीन पत्र भेजे थे

33) अजीजन बाई वह नर्तकी थी जिसने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों से लोहा लिया

34) मुगल सम्राट 1803 में ब्रिटिश संरक्षण में आ गए

35) अकबर द्वितीय के दरबार में बराबरी के स्तर पर मिलने वाला अंग्रेज अधिकारी लार्ड एम्हसर्ट(1823) था

36) मुगल सम्राट बहादुरशाह को लॉर्ड ऐलनबरो ने भेंट देनी बंद कर दी तथा सिक्कों से उसका नाम हटा दिया गया

37) लॉर्ड कैनिंग ने मुगल शासक को सम्राट की उपाधि से वंचित कर दिया

38) 1854 में ईनाम कमीशन जागीरों की जांच करने के लिए गठित किया गया

39) धार्मिक अयोग्यता अधिनियम या लेक्स लेकी कानून 1850 में पारित हुआ

40) 1806 में वेल्लोर विद्रोह धार्मिक कारण से हुआ

41) भारतीय सैनिकों को चार्ल्स नेपियर ने भाड़े का सैनिक कहा था

42) अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति का प्रमुख कारण ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियां थी

43) रॉयल एनफील्ड का प्रयोग डम डम, अम्बाला, स्यालकोट में प्रयोग करने का निश्चय किया गया

44) तत्कालीन भारत सचिव अर्ल स्टेनले ने ब्रिटिश पार्लियामेंट को 1857 की घटनाओं पर रिपोर्ट देते हुए सर्वप्रथम इसे सिपाही विद्रोह का नाम दिया

45) उर्दू शायर मिर्जा गालिब का जन्म 1796 में आगरा में हुआ तथा मृत्यु फरवरी 1869 को दिल्ली में हुई थी

46) 1857 के विद्रोह में व्यापारी वर्ग(साहूकार), शिक्षित वर्ग(उच्च तथा मध्यम वर्ग के आधुनिक शिक्षा प्राप्त) तथा कुछ अंग्रेजी शासन समर्थक भारतीय शासकों(जमीदारों) ने भाग नहीं लिया

32) The leader of the Revolt of 1857 was Nanasaheb who sent three letters to Napoleon III of France during the rebellion.

33) Ajijan Bai was the dancer who fought the British in the Revolt of 1857.

34) The Mughal emperors came under British protection in 1803.

35) Lord Amhersart (1823) was an English officer who was found on equal footing in the court of Akbar II.

36) Lord Ellenborough stopped giving gifts to the Mughal Emperor Bahadur Shah and his name was removed from the coins.

37) Lord Canning deprived the Mughal ruler of the title of emperor

38) In 1854, the Inam Commission was set up to investigate the Jagirs.

39) The Religious Disqualification Act or Lex Leckie Act, passed in 1850

40) Vellore rebellion in 1806 was due to religious reasons

41) Indian soldiers were called mercenaries by Charles Napier.

42) The main reason for the revolution of 1857 was the policies of the British Empire.

43) It was decided to use Royal Enfield in Dum Dum, Ambala, Sialkot

44) The India Secretary, Earl Stanley, while reporting on the events of 1857 to the British Parliament, first named it the Sepoy Mutiny.

45) Urdu poet Mirza Ghalib was born in Agra in 1796 and died in Delhi in February 1869.

46) In the revolt of 1857, the merchant class (millionaires), the educated class (the upper and middle classes with modern education) and some pro-English rulers (zamindars) did not participate.

47) फैजाबाद में विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्लाह शाह ने किया मौलवी अहमदुल्लाह शाह तमिलनाडु के रहने वाले थे किंतु फैजाबाद में आकर बस गए थे

48) ग्वालियर का सिंधिया राजवंश और हैदराबाद के निजाम ने 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता की।* सिंधिया के राजभक्ति के में कैनिंग ने कहा था, "यदि सिंधिया भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए तो मुझे कल ही बिस्तर गोल करना होगा।" ग्वालियर का मंत्री सर दिनकर राव और हैदराबाद का मंत्री सालारजंग ने अंग्रेजों की स्वामिभक्ति का खुलकर प्रदर्शन किया था।

49) 1857 के विद्रोह के समय बैरकपुर (मुर्शिदाबाद-बंगाल) में ब्रिटिश कमाण्डिंग ऑफिसर सर जॉन बेनेट हैरेस थे।

50) अवध की राजधानी लखनऊ में 1857 के विद्रोह के दौरान अंग्रेज रेजीडेंसी की सुरक्षा करते हुए सर हेनरी लारेंस, मेजर जनरल हैवलॉक तथा जनरल नील की मृत्यु हुई। जनरल जॉन निकलसन की मृत्यु दिल्ली में हुई थी।

51) **कैप्टन गार्डन** एक ऐसा अंग्रेज था जिसने 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया था यह **मंगल पांडे का मित्र** भी था

52) 1857 के विद्रोह में दण्डित अंतिम जीवित व्यक्ति का नाम **मुसाई** था जिसे 1907 में मुक्त किया गया

53) 1857 का विद्रोह का मुख्य कारण योजना व केंद्रीय संगठन में कमी थी

54) महारानी विक्टोरिया के 1858 के घोषणा पत्र को **भारतीय जनता का मैग्नाकार्टा** कहा गया

55) लार्ड क्रोमर ने कहा था कि “मैं चाहता हूं कि अंग्रेजों की नई पीढ़ी भारतीय विद्रोह के इतिहास को पढ़े, इसका मनन करे, यह तमाम शिक्षाओं और चेतावनियों से भरा है”

47) The rebellion in Faizabad was led by Maulvi Ahmadullah Shah. Maulvi Ahmadullah Shah was a resident of Tamil Nadu but had settled in Faizabad.

48) The Scindia dynasty of Gwalior and the Nizam of Hyderabad helped the British most in the revolt of 1857. Regarding Scindia's loyalty, Canning had said, "If Scindia also joins the rebellion, then I will have to round the bed tomorrow itself." Gwalior's minister Sir Dinkar Rao and Hyderabad's minister Salarjung had openly demonstrated the loyalty of the British.

49) Sir John Bennett Hares was the British Commanding Officer at Barrackpore (Murshidabad-Bengal) at the time of the Revolt of 1857.

50) During the Revolt of 1857 in Lucknow, the capital of Oudh, Sir Henry Lawrence, Major General Havelock and General Neil died while protecting the British Residency. General John Nicholson died in Delhi.

51) Captain Garden was an Englishman who fought against the British in the revolt of 1857, he was also a **friend of Mangal Pandey.**

52) Musai was the last living person punished in the revolt of 1857, who was freed in 1907.

53) The main reason for the revolt of 1857 was lack of planning and central organization.

54) Queen Victoria's manifesto of 1858 was called the **Magna Carta of the Indian people.**

55) Lord Cromer had said that "I want the new generation of Britishers to read the history of Indian rebellion, it is full of teachings and warnings".

5.2) जनजातीय विद्रोह || Tribal rebellion

1) पृष्ठभूमि
2) कारण
3) प्रमुख जनजाति विद्रोह
4) आंदोलन का स्वरूप
5) आंदोलन की सीमाएं

5.2) Tribal rebellion

5.2.1) पृष्ठभूमि

1) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी जो अंग्रेजी नीति से त्रस्त हो चुके थे, 19वीं सदी में एकत्रित होकर अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह किये

2) जनजातियों को आदिवासी नाम से सर्वप्रथम **ठक्कर बापा** ने संबोधित किया था

3) आदिवासियों जंगलों व पहाड़ों को अपना घर मानते थे

4) अंग्रेजों की **कृषि नीति व वन नीति** ने उनके जीवन में हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया

5) आदिवासी **बाहरी लोगों को दिकू** नाम से पुकारते थे, जिसमें **महाजन, ठेकेदार, जमींदार, अधिकार** आदि सम्मिलित होते थे। इन्हीं लोगों ने आदिवासियों का सर्वाधिक शोषण किया

6) **कुंवर सुरेश सिंह** द्वारा आदिवासी विद्रोहों को तीन चरणों में विभक्त किया गया है यथा :-

- **प्रथम चरण (1795-1860)** जैसे - संथाल, कोल, खोंड, पहाड़ियां विद्रोह आदि
- **द्वितीय चरण (1869-1920)** जैसे - भील, मुंडा, नैकदा, कोया, खारबाड़ आदि
- **तृतीय चरण (1920 के बाद)** जैसे - ताना भगत, चेंचू, रम्पा आदि

5.2.1) Background

1) Tribals living in different areas of India, who had been stricken by the British policy, gathered in the 19th century and organized many revolts against the British.
2) The tribes were first addressed by the tribal name by Thakkar Bappa.
3) The tribals considered forests and mountains as their home.
4) The agricultural policy and forest policy of the British started interfering in their lives.
5) The tribals used to call outsiders by the name Diku, which included moneylenders, contractors, zamindars, rights etc. These people exploited the tribals the most.
6) Tribal rebellions have been divided into three phases by Kunwar Suresh Singh, namely:-

- **First stage (1795-1860)** E.g., Santhal, Kol, Khond, Pahari Rebellion etc.
- **Second stage(1869-1920)** For example - Bhil, Munda, Naikda, Koya, Kharbad etc.
- **Third stage (after 1920)** E.g., Tana Bhagat, Chenchu, Rampa etc.

5.2.2) कारण

1) आर्थिक || Financial

3) सामाजिक || Social

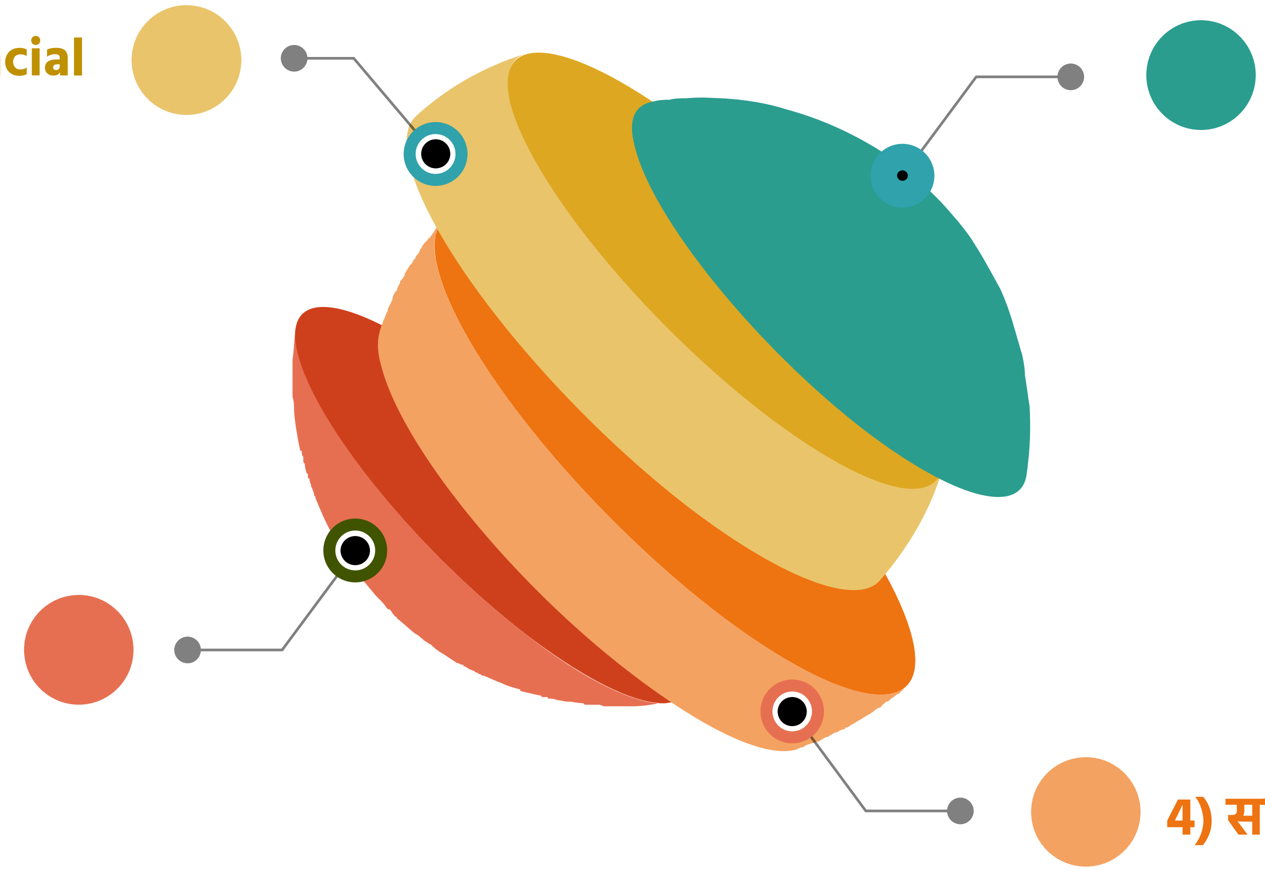

2) राजनैतिक || Political

4) सांस्कृतिक || Cultural

5.2.2) Reason

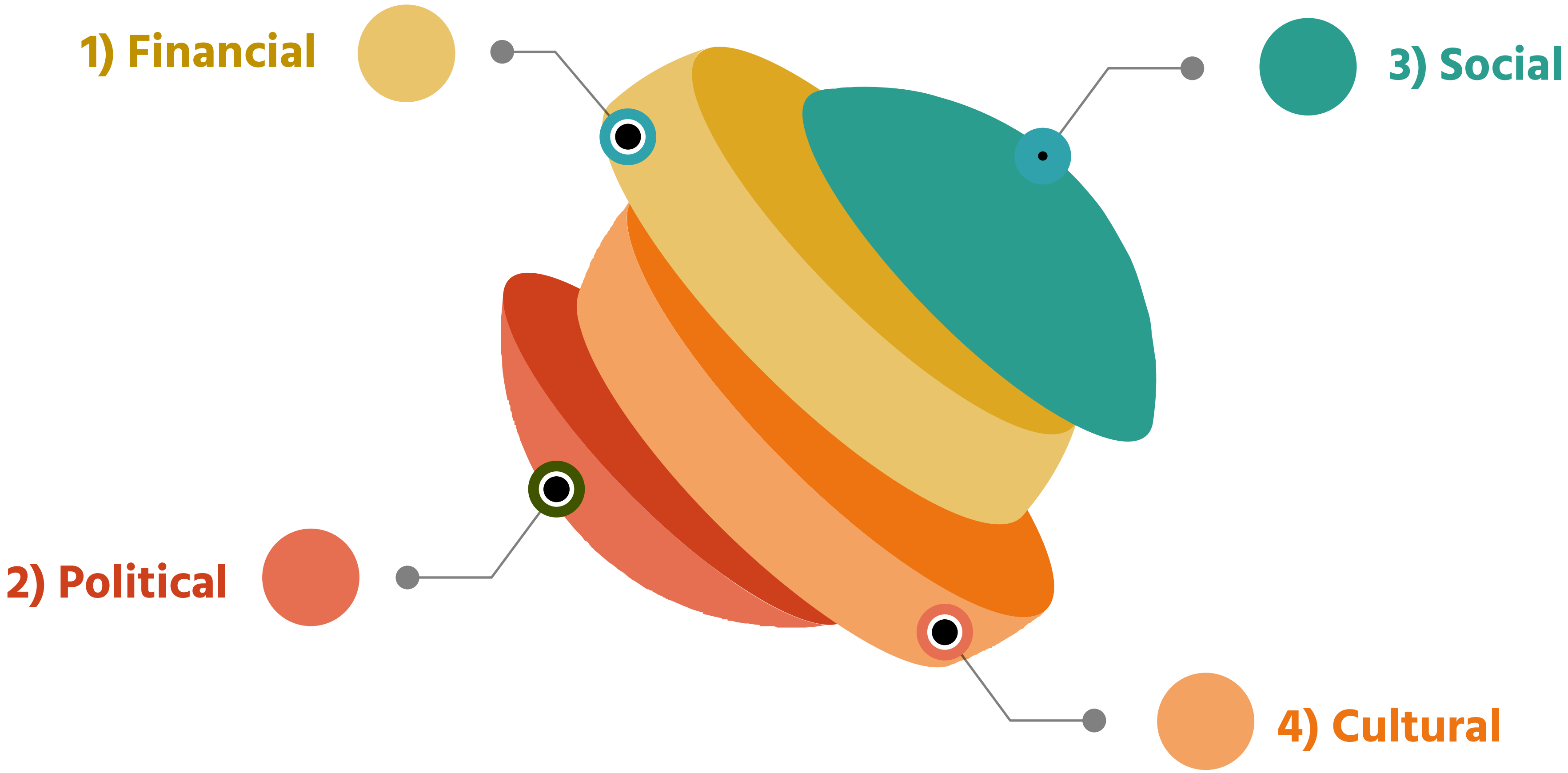

-: (1) आर्थिक कारण :-

1) खूंट कट्टी (सामूहिक कृषि) व **झूम कृषि** पर प्रतिबंध
2) दमनकारी भूराजस्व नीतियों द्वारा कबीला व्यवस्था के स्थान पर जमींदारी प्रथा का आरंभ
3) 1822 में परम्परागत मदिरा पर आबकारी शुल्क
4) सरकार द्वारा आदिवासी वन अधिकारों की समाप्ति व वनोत्पाद पर कर
5) अनुबंध श्रमिक व बेगारी
6) ठेकेदारी, महाजनो द्वारा शोषण

-: (2) राजनैतिक कारण :-

1) आदिवासी कानूनों की समाप्ति
2) आदिवासी क्षेत्रों में पुलिस व सैन्य प्रशासन

-: (3) सामाजिक हस्तक्षेप :-

1) आदिवासी परंपरा में ब्रिटिश व दिकुओं का हस्तक्षेप
2) उड़ीसा की खोंड जनजाति में प्रचलित नरबलि प्रथा की समाप्ति

-: (4) धार्मिक कारण :-

1) 1813 के अधिनियम के द्वारा इसाई मिशनरी को धर्म प्रचार की अनुमति
2) ईसाई मिशनरी द्वारा बलपूर्वक धर्मांतरण
3) धार्मिक आदिवासी नेताओं (ओझा, मसीहा आदि) द्वारा प्रोत्साहन

-: (1) Economic reasons :-

1) Ban on Khunt Katti (collective farming) and **Shifting agriculture**
2) The introduction of zamindari system in place of tribal system by repressive land revenue policies
3) Excise duty on traditional liquor in 1822
4) Abolition of tribal forest rights by the government and tax on forest produce
5) contract labor and forced labor
6) contracting, exploitation by moneylenders

-: (2) Political reasons :-

1) abolition of tribal laws
2) Police and military administration in tribal areas

-: (3) Social Intervention :-

1) Intervention of British and Dikus in tribal tradition
2) Termination of practice of human sacrifice prevalent in the Khond tribe of Orissa

-: (4) Religious reasons :-

1) Christian missionaries were allowed to preach religion by the act of 1813.
2) Forced conversion by Christian missionary by religious tribal leaders (exorcists, messiahs etc.)

5.2.3) प्रमुख जनजाति विद्रोह

1) पूर्वी भारत व बंगाल

A. कोल विद्रोह
B. संथाल विद्रोह
C. मुंडा विद्रोह
D. खासी विद्रोह
E. अहोम विद्रोह
F. उरांव विद्रोह
G. चुआर
H. नागा आंदोलन

2) पश्चिम भारत

A. रामोसी विद्रोह
B. भील विद्रोह
C. बिजौलिया

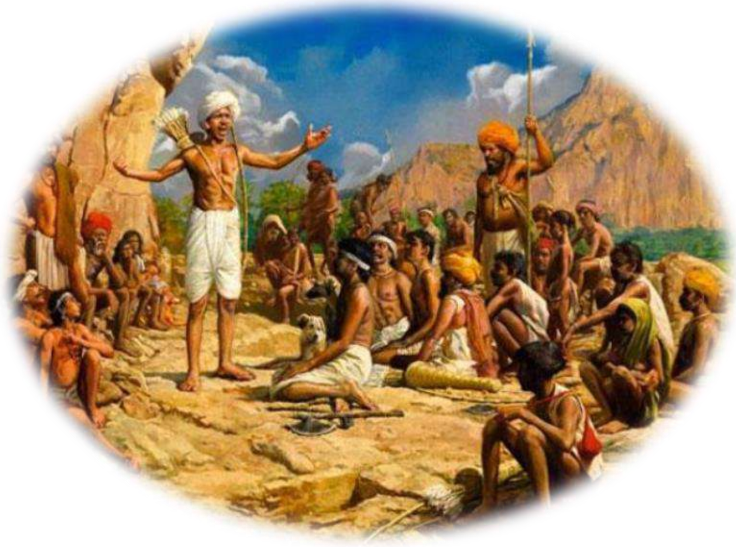

3) मध्य व दक्षिण भारत

A. वेलुपंथी विद्रोह
B. रम्पा विद्रोह
C. चेंचू विद्रोह
D. खोंड विद्रोह

5.2.3) Major Tribe Rebellion

1) East India and Bengal

A. Kol rebellion
B. Santhal rebellion
C. Munda rebellion
D. Khasi rebellion
E. Ahom rebellion
F. Oraon Rebellion
G. Chuar
H. Naga rebellion

2) West India

A. Ramosi Rebellion
B. Bhil rebellion
C. Bijaulia

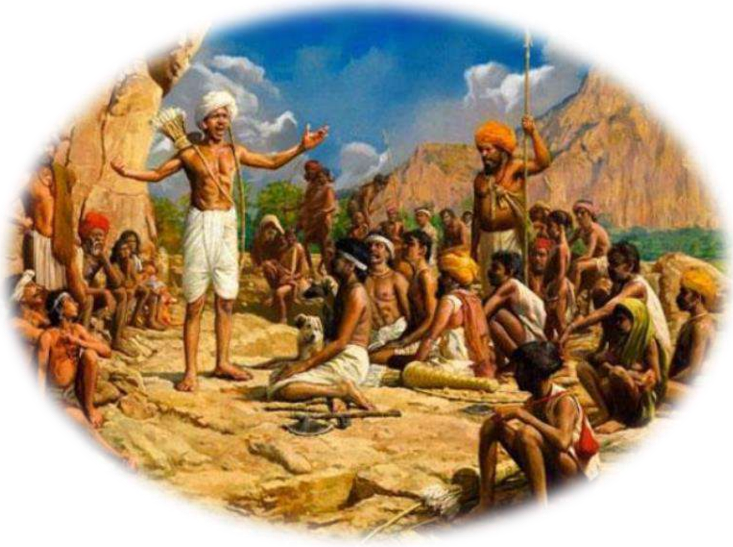

3) Central and South India

A. Veluthampi rebellion
B. Rampa rebellion
C. Chenchu rebellion
D. Khond Rebellion

A) संथाल विद्रोह (1855-56)

1) **क्षेत्र :-** दमन ए कोह (राजमहल से भागलपुर, झारखण्ड)

2) सबसे शक्तिशाली व महत्वपूर्ण आदिवासी विद्रोह(अन्य नाम - हुल आंदोलन)

3) **नेतृत्वकर्ता :-** सिद्धू व कान्हू, चांद एवं भैरव

4) **कारण :-**
- स्थाई बंदोबस्त द्वारा संथालों की जमीन छीन जाना
- दिकूओं द्वारा 50 से 500% तक ब्याज वसूली
- पुलिस व न्याय व्यवस्था द्वारा दुर्व्यवहार व शोषण
- आदिवासियों को बंधुआ मजदूर बनाना

5) **विद्रोह का आरम्भ व दमन :-**
- 30 जून 1855 को भगनीडीह में सिद्धू व कान्हू के नेतृत्व में आंदोलन का आरम्भ
- प्रारंभ में सिर्फ दिकूओं (महाजनों, जमीदारों) का विरोध फिर अंग्रेजों का
- सिद्धू व कान्हू ने ईश्वरीय घोषणा की - **"ठाकुर जी ने उन्हें निर्देश दिया है कि आजादी के लिए अब हथियार उठा लो "**
- महाजनों व जमीदारों पर हमला
- पुलिस, पोस्ट व रेलवे स्टेशन पर हमला

6) **विद्रोह का दमन :-**
- सरकार द्वारा मार्शल ला
- सिद्धू व कान्हू को पकड़ने हेतु 10 हज़ार का इनाम
- अगस्त 1855 में सिद्धू व फरवरी 1856 में कान्हू की गिरफ्तारी व मृत्यु दंड
- 1856 के अंत तक भागलपुर कमिश्नर ब्राउन व मेजर लॉयड द्वारा विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन

7) **महत्व :-**
- संथालों के असीम शौर्य के कारण सरकार द्वारा नवंबर 1856 में संथाल परगना नामक जिले की स्थापना
- संथालो के भू स्वामित्व संरक्षण हेतु "संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम“ (Santhal Pargana Tenancy Act)

A) Santhal/Hull Rebellion (1855-56)

1) **Area :-** Daman-e-Koh (Rajmahal to Bhagalpur, Jharkhand)

2) Most powerful tribal revolt

3) **Leader :-** Sidhu and Kanhu, Chand and Bhairav

4) **Reason :-**
   - Snatching of land from Santhals by permanent settlement
   - 50 to 500% interest recovery by dikus
   - Exploitation by police and judicial system
   - Bonded labourer

5) **Initiation and Suppression of Rebellion :-**
   - On 30 June 1855, movement started in Bhagnidih under the leadership of Sidhu and Kanhu.
   - Initially only the Dikus (Mahajans, Zamindars) were opposed, then the British
   - Sidhu and Kanhu made divine declaration - **"Thakur ji has instructed them to take up arms for freedom now"**
   - Attack on moneylenders, landlords & police

6) **Suppression of rebellion :-**
   - Martial law by the government
   - 10 thousand reward for catching Sidhu and Kanhu
   - Arrest and death sentence of Sidhu in August 1855 and Kanhu in February 1856
   - By the end of 1856, the revolt was brutally suppressed

7) **Importance :-**
   - Due to the immense valor of the Santhals, the district named Santhal Pargana was established by the government in November 1856.
   - "Santhal Pargana Tenancy Act" for protection of land ownership of Santhal

B) मुंडा विद्रोह (1899-1900)

1) मुंडा आदिवासी बिहार के छोटा नागपुर पठार के रांची के दक्षिण भाग में निवास करते थे

2) **क्षेत्र :-** छोटानागपुर (बिहार)

3) **नाम :-** मुंडा/सरदारी/उलगुलान विद्रोह या महाविद्रोह

4) **नेतृत्वकर्ता :-** बिरसा मुंडा

5) **उद्देश्य :-**

- शोषण मुक्त समाज व मुंडा राज्य की स्थापना
- कर्मकांड के स्थान पर एकेश्वरवाद की स्थापना
- अकाल व बीमारी से पीड़ित लोगों की सेवा करना
- ब्रिटिश शासन से मुक्ति

6) **राजनीतिक कार्यक्रम :-**

- सरकारी नियमों व कर्मचारियों की अवहेलना
- ब्रिटिश सरकार को कर ना देना
- जमीन पर किसानों का नियंत्रण स्थापित करना
- आवश्यकता पड़ने पर सशस्त्र विद्रोह करना

7) **कारण :-**

- अंग्रेजों द्वारा सामूहिक खेती(खूंटकट्टी / मुंडारी) पर प्रतिबंध
- महाजनों का बढ़ता शोषण
- स्थाई बंदोबस्त द्वारा संथालों की जमीनों का छीना जाना
- पुलिस व न्याय व्यवस्था द्वारा शोषण व भ्रष्टाचार

8) **विद्रोह का आरम्भ :-**

- 1895 में बिरसा मुंडा ने स्वयं को **भगवान का दूत** घोषित किया
- 1899 में बिरसा मुंडा द्वारा विद्रोह का एलान – "दिकुओं से हमारी लड़ाई होगी और उनके खून से जमीन इस तरह लाल होगी जैसे लाल झंडा"
- महिलाओं की भागीदारी
- सशस्त्र विद्रोह

B) Munda Rebellion (1899-1900))

1) The Munda tribes lived in the southern part of Ranchi in the Chota Nagpur plateau of Bihar.

2) **Area:-** Chota Nagpur plateau of Bihar.

3) **Name:-** - Munda/Sardari/Ulgulan Rebellion or Great Rebellion

4) **Leader :-** Birsa Munda

5) **Objective:-**
   - Establishment of exploitation free Munda state
   - Replacement of ritualism with monotheism
   - Serving people suffering from famine and disease
   - Freedom from British rule

6) **Political Methods :-**
   - Disobeying government rules and employees
   - Do not pay tax to the British government
   - To establish control of the peasants over the land
   - Armed rebellion when necessary

7) **Causes :-**
   - Ban on Collective Farming (Khuntkatti / Mundari)
   - Exploitation by moneylenders
   - Encroachment of the lands by the Permanent Settlement
   - Exploitation by police and judicial system

8) **Start of rebellion :-**
   - Birsa Munda declared himself a messenger of God in 1895.
   - Rebellion announced by Birsa Munda in 1899 - "We will fight with the dikus, and the land will be red like a red flag with their blood"
   - Women's participation
   - Armed rebellion

9) **दमन :-** 3 फरवरी 1900 को अंग्रेजों ने सिंहभूमि से (सेलरकैब पहाड़ी) से गिरफ्तार किया व जून 1900 में हैजा के कारण रांची जेल में मृत्यु

10) **महत्व :-** 1908 में छोटा नागपुर में काश्तकारी कानून (Tenancy Law) द्वारा कृषकों को राहत तथा बेगारी पर प्रतिबंध

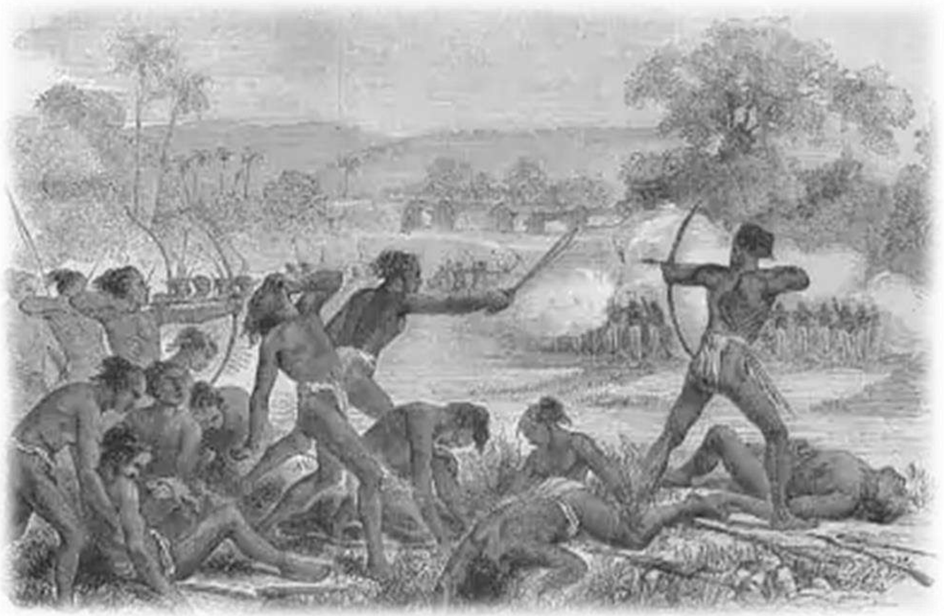

C) भील विद्रोह

- महाराष्ट्र
- मध्यप्रदेश
- राजस्थान

-: महाराष्ट्र का भील विद्रोह (1820-1857) :-

1) **क्षेत्र :-** पश्चिमी तट का खानदेश जिला

2) **नेतृत्वकर्ता :-** सेवरम, भागोजी तथा काजल सिंह

3) **मुख्य कारण :-**
   - कृषि कर
   - अंग्रेजों की दमनकारी नीति

4) **दमन :-** 1857 तक अंग्रेजो द्वारा दमन

9) **Suppression:-** Arrested by the British from Singhbhoomi (Sellercab hill) on 3 February 1900 and died in Ranchi Jail due to cholera in June 1900.

10) **Importance:-** Relief to the farmers and ban on forced labor by the Tenancy Law in Chota Nagpur in 1908.

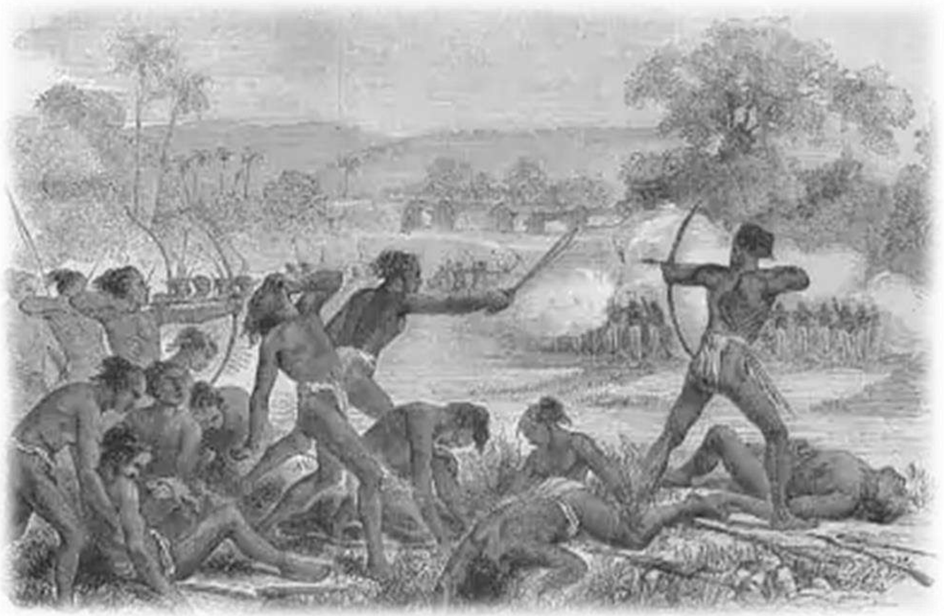

C) Bheel rebellion

- Maharashtra
- Madhya Pradesh
- Rajasthan

-: Maharashtra's Bhil Rebellion (1820-1857) :-

1) **Area:-** Khandesh district of western coast

2) **Leader:-** Sevaram, Bhagoji and Kajal Singh

3) **Major reason:-**
   - agricultural tax
   - Exploited policy of British

4) **Suppression:-** suppression by the British till 1857

बिरसा मुण्डा (धरती अब्बा/जगत पिता)

1) **जन्म** – 1875, लिहतु (रांची)
2) **लोकप्रियता का आधार** - औषधीय व चिकित्सीय निपुणता
3) ईसाई बने फिर वैष्णव धर्म
4) **एकेश्वरवाद** व नैतिक आचरण पर बल
5) अपने समर्थकों को **सिंगबोंगा** की पूजा करने को कहा
6) 10 नवंबर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 नवंबर को **जनजातीय गौरव दिवस** के रूप में घोषित करने को मंज़ूरी दी है। 15 नवंबर झारखंड राज्य का स्थापना दिवस भी है।

Birsa Munda (Dharti Abba / Father of the world)

1) **Birth–** 1875, Lihtu (Ranchi)
2) **Base of popularity –** Expertise medicinal and therapeutic
3) Adopted christian then Vaishnavism
4) Emphasis on Monotheism and Ethical Conduct
5) Asked his supporters to worship Singbonga
6) On November 10, 2021, Prime Minister Narendra Modi has approved the declaration of November 15 as Tribal Pride Day. 15 November is also the foundation day of Jharkhand state.

1) सिद्धू और कान्हू मुर्मू :-

- 30 जून, 1855 को दो संथाल भाइयों सिद्धू और कान्हू मुर्मू ने 10,000 संथालों का एकत्र किया और अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह की घोषणा की।
- अंग्रेज़ों को अपनी मातृभूमि से भगाने की शपथ ली।
- मुर्मू भाइयों की बहनों फूलो और झानो ने भी विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई।

2) शहीद वीर नारायण सिंह :-

- छत्तीसगढ़ के **सोनाखान का गौरव**
- 1856 के अकाल के बाद अनाज के स्टॉक को लूट लिया और गरीबों में बाँट दिया।
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के पहले शहीद

3) श्री अल्लूरी सीता राम राजू :-

- उनका जन्म 4 जुलाई, 1897 को आंध्र प्रदेश में भीमावरम के पास मोगल्लु नामक गाँव में हुआ था।
- अल्लूरी को अंग्रेज़ों के खिलाफ 'रम्पा विद्रोह' का नेतृत्व, जिसमें उन्होंने विशाखापत्तनम और पूर्वी गोदावरी ज़िलों के आदिवासी लोगों को विदेशियों के खिलाफ विद्रोह करने के लिये संगठित किया।

4) रानी गौंडिल्यू :-

- नगा समुदाय की आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता थीं, जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।
- 13 वर्ष की आयु में वह अपने चचेरे भाई हाइपौ जादोनांग के हेराका धार्मिक आंदोलन में शामिल हो गईं।
- उन्होंने मणिपुर क्षेत्र में गांधी जी के संदेश का भी प्रसार किया।

1) Sidhu and Kanhu Murmu :-

- On June 30, 1855, Santhal brothers Sidhu and Kanhu Murmu gathered 10,000 Santhals & declared revolt against Britishers
- Phoolo and Jhano, the sisters of the Murmu brothers, also took an active part in the rebellion.

2) Shaheed Veer Narayan Singh :-

- Pride of **Chhattisgarh's Sonakhan**
- After the famine of 1856, grain stocks were looted and distributed among the poor.
- First martyr of Chhattisgarh in the freedom struggle of 1857

3) Sri Alluri Sita Rama Raju :-

- He was born on July 4, 1897, in a village called Mogallu near Bhimavaram in Andhra Pradesh.
- He led 'Rampa Rebellion' against the British & organized tribes of Visakhapatnam & East Godavari districts

4) Rani goundileu :-

- She was the spiritual and political leader of the Naga community, who led the rebellion against British rule in India.
- At the age of 13 she joined the Heraka religious movement of her cousin Haipou Jadonang.
- She also spread the message of Gandhiji in Manipur region.

-: राजस्थान का भील विद्रोह (1821) :-

1) **क्षेत्र :-** मेवाड़

2) **नेतृत्व :-** दौलत सिंह

3) **कारण :-**

- तिसाला नामक भूमि कर
- पारम्परिक सुरक्षा करों(भोलाई व रखाली) की अंग्रेजों द्वारा समाप्ति
- लकड़ी काटने पर प्रतिबंध

D) रामोसी विद्रोह (1822-1841)

1) **क्षेत्र :-** पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र)

2) रामोसी जनजाति के लोग मराठा सेना व पुलिस के कर्मचारी थे जिन्होंने सम्राज्य पतन के बाद कृषि को अपनाया

3) **नेतृत्वकर्ता :-** चित्तर सिंह, उमा सिंह एवं नरसिंह दत्तात्रेय पंतकर

4) **कारण :-**

- अत्याधिक कर व क्रूरतापूर्ण वसूली प्रक्रिया (चित्तर सिंह)
- 1825 में अकाल (उमा सिंह)
- 1839 में अंग्रेजों द्वारा सतारा के राजा को निर्वासित करना (नरसिंह दत्तात्रेय पंतकर)

5) **परिणाम :-** नरसिंह दत्तात्रेय ने सतारा पर अधिकार किया परन्तु अंग्रेजों द्वारा पुनः अधिकार

-: Bhil Rebellion of Rajasthan (1821) :-

1) **Area :-** Mewar
2) **Leader :-** Daulat Singh
3) **Reason :-**
   - land tax called tisala
   - Abolition of traditional security taxes (Bholai and Rakhali) by the British
   - Ban on cutting wood

D) Ramosi Rebellion (1822-1841)

1) **Area :-** Western Ghats (Maharashtra)
2) The people of the Ramosi tribe were the employees of the Maratha army and police, who took up agriculture after the fall of the empire.
3) **Leader :-** Chittar Singh, Uma Singh and Narsingh Dattatreya pantkar
4) **Reason :-**
   - High taxes and cruel recovery process (Chittar Singh)
   - Famine in 1825 (Uma Singh)
   - Deportation of the Raja of Satara by the British in 1839(Narsingh Dattatreya pantkar)
5) **Result:-** Narasimha Dattatreya occupied Satara but again reoccupied by the British.

E) रम्पा विद्रोह (1879 व 1922)

1) **क्षेत्र :-** आंध्रप्रदेश के गोदावरी जिले का उत्तरी तटवर्ती पहाड़ी क्षेत्र

2) **नेतृत्वकर्ता :-** राजू रम्पा(1879) तथा अल्लूरी सीताराम राजू(1922)

3) **कारण :-**

- 1879 में ताड़ी निकालने पर प्रतिबंध
- साहूकार व गुडेम नामक तहसीलदार द्वारा शोषण
- झुमिंग कृषि पर प्रतिबंध
- वन अधिकारों की समाप्ति
- इमारती लकड़ी व चराई की कर दरों में वृद्धि

4) **परिणाम :-** 1924 में सीताराम राजू की मृत्यु के पश्चात आंदोलन समाप्ति

5) **अल्लूरी सीताराम राजू :-**

- गैर आदिवासी
- गांधी जी की अहिंसावादी विचारधारा से प्रभावित किंतु आदिवासी कल्याण हेतु हिंसा व गुरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया

F) उरांव विद्रोह / ताना भगत आंदोलन (1914)

1) **क्षेत्र :-** झारखण्ड

2) उरांव झारखण्ड का जनजाति समूह है जबकि भगत का अर्थ है संत है

3) **नेतृत्वकर्ता :-** जतरा भगत, बलराम भगत, गौ रक्षिणी भगत व देव मेनिया(महिला)

4) यह मूलतः गांधीवाद से प्रेरित अहिंसक व रचनात्मक आंदोलन था जो राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया

5) **उद्देश्य :-**

- कुरीतियों की समाप्ति
- अंधविश्वासों की समाप्ति
- शराब मुक्त समाज
- पशुबलि की समाप्ति
- ब्रिटिश शासन से मुक्ति

E) Rampa Rebellion (1879 and 1922)

1) **Area :-** Godavari District, Andhra Pradesh
2) **Leader :-** Raju Rampa(1879) & Alluri Sitarama Raju (1922)
3) **Reasons :-**
   - Ban on alcohol extraction in 1879
   - Exploitation by moneylender & tehsildar named Gudem
   - Ban on shifting agriculture
   - Termination of forest rights
   - Timber and grazing tax rates increases
4) **Result :-** Movement ended after death of Sitaram Raju in 1924.
5) **Alluri Sitaram Raju :-**
   - Nontribal
   - Influenced by Gandhi's non-violent ideology, but for tribal welfare, accepted violence and guerrilla warfare

F) Oraon Rebellion/Tana Bhagat Movement (1914)

1) **Area :-** Jharkhand
2) Oraon is a tribal group of Jharkhand whereas Bhagat means saint.
3) **Leader :-** Jatra Bhagat, Balram Bhagat, Gau Rakshini Bhagat and Dev Maniya (Female)
4) It was basically a non-violent and constructive movement inspired by Gandhism, which was associated with the national movement.
5) **Objective :-**
   - End of evils
   - End of superstitions
   - Alcohol free society
   - Cessation of animal sacrifice
   - Free from British rule

6) **रचनात्मक :-** लगान न देना, बेगार न करना आदि

7) **परिणाम :-**

- 1948 में ताना भगत रैयत एग्रीकल्चरल लैंड रेस्टोरेशन एक्ट पारित
- 1913 से 1942 तक अंग्रेजों द्वारा नीलाम जमीनों की वापसी

8) **मुख्य तथ्य :-**

- जतरा उरांव का जन्म वर्तमान गुमला जिला के बिशनपुर प्रखंड के चिंगारी गांव में 1888 में हुआ था
- जतरा उरांव ने 1914 में आदिवासी समाज में पशु बलि, मांस भक्षण, जीव हत्या, शराब सेवन आदि दुर्गुणों को छोड़कर सात्विक जीवन यापन करने का अभियान छेड़ा
- 1922 में कांग्रेस के गया सम्मेलन और 1923 के नागपुर सत्याग्रह में बड़ी संख्या में ताना भगत शामिल हुए थे
- 1940 में रामगढ़ काँग्रेस में तानाभगतों ने महात्मा गांधी को 400 रुपये की थैली दी थी

G) नागा या जियारलांग आंदोलन

1) **क्षेत्र :-** मणिपुर व नागालैंड

2) **नेतृत्वकर्ता :-** रोगमेई जदोनांग तथा रानी गैडिनल्यू

3) **कारण :-**

- इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य रुढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा अतार्किक रीति-रिवाजों को समाप्त करना था।
- ईसाई मिशनरियों का सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप
- रुढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा अतार्किक रीति-रिवाजों
- कष्टकारी करों एवं कानूनों

4) **अन्य तथ्य :-**

- प्रारम्भ में इस आंदोलन का नेतृत्व एक युवा नेता रोंगमेई जदोनांग ने किया. जिसका लक्ष्य नाग राज्य' की स्थापना करना था। अगस्त 1931 में जदोनांग को गिरफ्तार करके फांसी दे दी गई।

6) **Constrictive Approaches :-** not paying rent, not doing forced labor etc.

7) **Result:-**

- The Tana Bhagat Ryot Agricultural Land Restoration Act was passed in 1948.
- Return of lands auctioned by British from 1913 - 1942

8) **Major facts:-**

- Jatra Oraon was born in 1888 in Chingari village of Bishanpur block of present Gumla district.
- In 1914, He started a campaign to lead moral life in tribal society, by abolishing bad practices such as animal sacrifice,alcohol consumption etc.
- Large number of people of Tana Bhagat participated in the Gaya Conference of Congress in 1922 and the Nagpur Satyagraha of 1923.
- In the Ramgarh Congress in 1940, the tanabhagats gave a bag of 400 rupees to Mahatma Gandhi.

G) Naga or Jiarlang Movement

1) **Area:-** Manipur and nagaland

2) **Leader :-** Rogmei Jadonang and rani Gaidinliu

3) **Reason :-**

- The main objective of this movement was to end orthodoxy, superstition and irrational customs.
- Intervention of Christian missionaries in social order
- orthodoxy, superstitions and illogical customs
- painful taxes and laws

4) **Other facts:-**

- Initially this movement was led by a youth leader RongmeiJadonang. Whose goal was to establish 'Nag Rajya'. Jadonang was arrested and hanged in August 1931.

- इसके पश्चात सन् 1932 से इस आंदालन का नेतृत्व 17 वर्षीय नागा बालिका गाइदिन्ल्यू ने किया
- गाधीवादी आदर्शों से प्रभावित होकर गैडिनल्यू ने इस आंदोलन को सविनय अवज्ञा आदोलन के साथ जोड़कर इसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया।
- गाइदिन्ल्यू को 'रानी' की उपाधि जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1937 ई. मे जेल मे मुलाकात के दौरान प्रदान की गई।
- बाद में भारत सरकार द्वारा रानी गाइदिन्ल्यू को **पद्म भूषण** सम्मान से सम्मानित किया।

H) चुआर व हो विद्रोह

1) यह विद्रोह 1768 से 1772 के मध्य हुआ था।
2) इसे 'भूमि विद्रोह' की भी संज्ञा प्रदान की गई है।
3) चुआर लोग बंगाल में मेदिनीपुर जिले की आदिम जाति के लोग थे।
4) अकाल तथा बढ़े हुए लगान के कारण चुआर जाति ने हथियार उठा लिया।
5) इनका नेतृत्व राजा जगन्नाथ तथा दुर्जन सिंह ने किया और अपने ही इलाके को उजाड़ दिया तथा कम्पनी को लगान देना बंद कर दिया।
6) यह विद्रोह लगभग 30 वर्षो तक चलता रहा।
7) इसी तरह छोटा नागपुर तथा सिंह भूमि जिले की हो जनजाति ने भी बढ़े हुए राजस्व कर के प्रतिकार में जमींदारों व अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
8) 1820-22 ई. में तथा उसके पश्चात् 1831 से 1837 तक यह क्षेत्र विद्रोह ग्रस्त रहा।

- After this, from 1932, this movement was led by the 17-year-old Naga girl Gaidinlu.
- Influenced by the Gandhian ideals, Gaidinliu combined this movement with the Civil Disobedience Movement and gave it a national form.
- Gaidinliu was conferred the title of ‘Rani' by Jawaharlal Nehru during his meeting in the jail in 1937 AD.
- Later, Rani Gaidinliu was honored with Padma Bhushan by the Government of India.

H) Chuar and Ho rebellion

1) This rebellion took place between 1768 and 1772.
2) It has also been termed as 'land rebellion'.
3) The Chuar people were the tribal people of Medinipur district in Bengal.
4) Due to famine and increased rent, the Chuar caste took up arms.
5) Led by Raja Jagannath and Durjan Singh and destroyed their own area and stopped paying rent to the company.
6) This rebellion lasted for about 30 years.
7) Similarly, the Ho tribes of Chota Nagpur and Singh Bhoomi district also revolted against the landlords and the British in retaliation for the increased revenue tax.
8) In 1820-22 AD and after that from 1831 to 1837 this area was revolted.

I) पाइक विद्रोह

1) पाइक :- लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले उड़ीसा के खुर्दा क्षेत्र के सैनिक थे।

2) अंग्रेजों की भू-नीति ने पाइकों की लगान मुक्त भूमि पर भी कर लगा दिया और उसकी वसूली बड़ी कड़ाई के साथ करना प्रारम्भ किया

3) फलतः खुर्दा के राजा ने पाइकों को साथ लेकर 1804 ई. में विद्रोह किया और अंग्रेजों को परास्त किया।

4) कुछ वर्ष बाद 1817 ई. में पाइकों ने जगबन्धु के नेतृत्व में अंग्रेजी शासन के अत्याचार और शोषण के विरुद्ध पुनः विद्रोह किया और अंग्रेजी सेना को परास्त कर पुरी पर कर लिया

5) कठिन संघर्ष के बाद अंग्रेजों ने पाइकों के विद्रोह को 1825 ई. तक दमित कर दिया।

J) अहोम विद्रोह

1) अहोम असम में निवास करने वाले अभिजात वर्ग के लोग थे।

2) जब अंग्रेजों ने अहोम प्रदेश को अपने राज्य में सम्मिलित करना चाहा तो इस वर्ग ने इसका विरोध किया क्योंकि इसके पूर्व कम्पनी द्वारा बर्मा युद्ध से लौटने के पश्चात् अहोम के क्षेत्र को लौटाने का बचन दिया था।

3) 1828 में अहोम लोगों ने गोमधर कुंवर को अपना राजा घोषित कर दिया तथा रंगपुर पर चढ़ाई करने की योजना बनाई किन्तु वे सफल नहीं हो सके

4) 1830 में दूसरे विद्रोह की योजना बनाई गयी किन्तु अंग्रेजों ने अहोमो से समझौता कर लिया, जिसकेतहत उत्तरी असम के प्रदेश को महाराज पुरन्दर सिंह को दे दिया, जिससे अहोम विद्रोह शांत हो गया

I) Pike Rebellion

1) Pike:- The soldiers of Khurda region of Orissa who used tax-free land.
2) The land policy of the British also imposed tax on the tax-free land of Paiks and started collecting it strictly.
3) As a result, the Raja of Khurda, along with the Paiks, revolted in 1804 and defeated the British.
4) A few years later, in 1817 AD, the Paiks revolted against the tyranny and exploitation of the British rule under the leadership of Jagabandhu and defeated the British army and captured Puri.
5) After a hard struggle, the British suppressed the revolt of Paiks till 1825 AD.

J) Ahom rebellion

1) The Ahoms were the aristocratic people living in Assam.
2) When the British wanted to include the Ahom region in their state, this class opposed it because earlier the company had promised to return the area of Ahom after returning from the Burma war.
3) In 1828, the Ahom people declared Gomdhar Kunwar as their king and planned to attack Rangpur but they could not succeed.
4) A second rebellion was planned in 1830, but the British made an agreement with the Ahomos, under which the region of northern Assam was given to Maharaj Purandar Singh, due to which the Ahom rebellion was pacified.

K) खासी विद्रोह

1) अंग्रेजों ने वर्तमान की पूर्वोत्तर स्थित जयन्तिया तथा गारो
2) पहाड़ी क्षेत्र पर अधिकार करके ब्रह्मपुत्र घाटी तथा सिलहट को जोड़ने के लिए एक सैनिक मार्ग बनाने की योजना बनाई
3) जिसके लिए बहुत से अंग्रेज व बंगाली लोगों को वहाँ भेजा गया। सरकार के इस कृत्य का विरोध वहाँ पर निवास करने वाली खासी जनजाति ने किया
4) जिसका नेतृत्व इनके मुखिया तीरत सिंह ने किया। तीरत सिंह ने गारो, खाम्पटी तथा सिंहपो लोगों की सहायता से लगभग 10 हजार साथियों को लेकर अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया।
5) 1829 से 1833 तक यह संघर्ष जारी रहा इसमें तीरत सिंह की सहायता बारमानिक तथा मुकुंद सिंह ने भी किया
6) किंतु 1833 के अंत तक खासी लोगों ने कुछ शर्तों के साथ अंग्रेजों के समक्ष आत्म समपर्ण कर दिया और विद्रोह समाप्त हो गया

L) कोल विद्रोह

1) छोटानागपुर की कोल जाति, अंग्रेजों की भू- व्यवस्था से असंतुष्ट थी क्योंकि उनकी जमीन छीनकर मुस्लिम तथा सिक्खों को दे गयी
2) 1822 ई. में सरकार ने चावल से निर्मित शराब पर उत्पादन शुल्क लगा दिया
3) फलतः 1831 ई. में विद्रोह भड़क उठा जिसका नेतृत्व बुद्धो भगत ने
4) बुद्धो भगत के अतिरिक्त जोआ भगत, केशो भगत, नरेन्द्रशाह, मनीकी तथा मदरा महतो आदि ने इस विद्रोह को गति प्रदान की।
5) 1832 में बुद्धो भगत हजारो विद्रोहियों के साथ मारे गये।
6) 1832 ई. में गंगा नारायण ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया।
7) छिटपुट रूप से यह 1848 ई. तक चलता रहा। बाद में इसे दबा दिया गया।
8) ज्ञातव्य है कि इस विद्रोह को 'लरका विद्रोह' की भी संज्ञा प्रदान की गई है।

K) Khasi rebellion

1) The British established the present-day Jaintia and Garo in the northeast.
2) Planned to build a military route to connect the Brahmaputra valley and Sylhet by occupying the hilly area.
3) For which many English and Bengali people were sent there. This act of the government was opposed by the Khasi tribe living there.
4) Which was led by their chief Tirat Singh. Tirat Singh attacked the British with the help of Garo, Khampti and Singhpo people with about 10 thousand companions.
5) This struggle continued from 1829 to 1833, in which Tirat Singh was assisted by Barmanik and Mukund Singh.
6) But by end of 1833, the Khasi people surrendered to the British with certain conditions and the rebellion ended.

L) Kol Rebellion

1) The Kol caste of Chotanagpur was dissatisfied with British land system as their land was snatched and given to Muslims and Sikhs.
2) In 1822, government-imposed excise duty on liquor.
3) As a result, rebellion broke out in 1831, which was led by Buddha Bhagat.
4) Apart from Buddha Bhagat, Joa Bhagat, Kesho Bhagat, Narendra Shah, Maniki and Madra Mahato etc. gave impetus to this rebellion.
5) In 1832 Buddha Bhagat was killed along with thousands of rebels.
6) Ganga Narayan led this movement in 1832 AD.
7) It continued till 1848 AD. Later it was suppressed.
8) It is known that this rebellion was also given the name of 'Larka Rebellion'.

आंदोलन/विद्रोह	अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता	कारण व अन्य तथ्य
पहाड़िया विद्रोह	(1770 के दशक में)	राजमहल पहाड़ी(झारखण्ड)	--------	सरकार ने 1778 में समझौता करके विद्रोह को शांत कर दिया
चुआर विद्रोह	(1768-99)	मिदनापुर(प. बंगाल)	दुर्जन सिंह, जगन्नाथ	अकाल तथा बड़े हुए भूमि कर एवं अन्य आर्थिक संकटों के कारण सशस्त्र विद्रोह हुआ
खासी विद्रोह	(1830-33)	भारत के उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में	तीरत सिंह	विद्रोह का मुख्य कारण असम और सिलहट मार्ग को जोड़ने वाली सड़क के निर्माण हेतु खासी लोगों को बेगार हेतु बाध्य करना था
कोल विद्रोह	(1831-32)	छोटा नागपुर	बुद्धो भगत	गांव को छीनकर बाहरी लोगों को दिया जा रहा था और ये आदिवासी बाहरी लोगों को अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते थे
खोंड विद्रोह	(1837-56)	तमिलनाडु से बंगाल एवं मध्य भारत तक विस्तृत पहाड़ी क्षेत्र	चक्र बिसोइ	बाहरी लोगों का आगमन व मोरिया प्रथा पर प्रतिबंध

Revolt	Duration	Area	Leader	Reason and other facts
Paharia Rebellion	(1770 के दशक में)	Rajmahal Hill (Jharkhand)	--------	The government quelled the rebellion in 1778 by compromise
Chuar Rebellion	(1768-99)	Midnapore (W. Bengal)	Durjan Singh, Jagannath	Armed rebellion due to famine and increased land taxes and other economic crises
Khasi rebellion	(1830-33)	Northeastern hilly regions of India	Tirat Singh	The main reason for the rebellion was to force the Khasi people to do forced labor for the construction of a road connecting Assam and Sylhet road.
kol rebellion	(1831-32)	Chota Nagpur	Buddha Bhagat	The village was being snatched away and given to outsiders and these tribals considered outsiders as a hindrance to their freedom.
Khond Rebellion	(1837-56)	Extensive mountainous region from Tamil Nadu to Bengal and Central India	Chakra Bisoi	Ban on the arrival of outsiders and the practice of Moria

आंदोलन/विद्रोह	अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता	कारण व अन्य तथ्य
चेंचू विद्रोह	---------	आंध्र प्रदेश तेलंगाना उड़ीसा एवं कर्नाटक		साहूकारों, जमीदारों एवं पुलिस द्वारा किये जाने वाले शोषण
अहोम विद्रोह	---------	असम	गोमधर कुंवर	प्रथम वर्मा युद्ध(1824-26) के पश्चात कंपनी द्वारा असम से वापस लौटने का वचन पूरा न करने से अहोम जनजाति के लोग आक्रोशित हो गए

आंदोलन/विद्रोह	अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता
पोलिगारों का विद्रोह	1801-05	मालाबार एवं डिंडीगुल(तमिलनाडु)	वीर पी कट्टवामन
वेलुथम्पी विद्रोह	1808-09	ट्रावनकोर(केरल)	वेलुथम्पी
पाइक विद्रोह	1817-25	उड़ीसा	बख्शी जगबंधु
खामती विद्रोह	1839-43	असम	खतागोहाई और रुनुगोटाई

Revolt	Duratio	Area	Leader	Reason and other facts
Chenchu rebellion	---------	Andhra Pradesh Telangana Orissa and Karnataka		Exploitation by moneylenders, zamindars and police
Ahom rebellion	---------	Assam	Gomdhar Kunwar	After the First Varma War (1824-26), Ahom tribe were angry because the Company did not fulfill its promise to return Assam.

Revolt	Duratio	Area	Leader
Revolt of the Poligars	1801-05	Malabar and Dindigul (Tamil Nadu)	Veer P Kattvaman
Veluthampi Rebellion	1808-09	Travancore (Kerala)	veluthampi
pike rebellion	1817-25	Orissa	Bakshi Jagabandhu
Khamti Rebellion	1839-43	Assam	Khatagohai and Runugotai

भुयान और जुआंग विद्रोह	1867-68	क्योंझर(उड़ीसा)	रत्न नायक
गडकरी विद्रोह	1844	कोल्हापुर(महाराष्ट्र)	बाबाजी अहिरेकर
विजयनगरम विद्रोह	1794	विजयनगर	------
किट्टूर का विद्रोह	1824-29	किट्टूर(कर्नाटक)	रानी चेन्नमा एवं रायप्पा
सूरत का नमक आंदोलन	1844	जनता	
कच्छ का विद्रोह	1819-31	कच्छ(गुजरात)	भारमल एवं झरेजा सरदार
छोटा नागपुर विद्रोह(कोलारी विद्रोह)	1820-36	छोटा नागपुर क्षेत्र	कोलारी आदिवासी सरदारों द्वारा

Bhuyan and juang rebellion	1867-68	Keonjhar (orissa)	Ratna nayak
Gadkari rebellion	1844	Kolhapur (maharashtra)	Babaji ahirekar
Vizianagaram rebellion	1794	Vijayanagar	------
Kitter's rebellion	1824-29	Kittar (karnataka)	Rani chennama and rayappa
Surat salt movement	1844	Surat	People
Revolt of kutch	1819-31	Kutch (gujarat)	Bharmal and jhereja sardar
Chota nagpur rebellion (kolari rebellion)	1820-36	Chota nagpur region	By kolari tribal chieftains

5.2.4) जनजाति आंदोलन का स्वरूप

1 स्थानीय

2 जातीय

3 सुधावादी

4 परम्परागत सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का बचाव

5 हिंसक

6 केवल शोषक वर्ग के विरुद्ध

7 आदिवासियों का परंपरागत हथियारों द्वारा संघर्ष

5.2.4) Nature of Tribal Movement

1. Local
2. Ethnic
3. Reformative
4. Preservation of traditional social and economic system
5. Violent
6. Against the exploiting class
7. Use of traditional weapons

1) जनजातीय/आदिवासी विद्रोह **स्थानीय मुद्दों से सम्बंधित** होते थे तथा इन विद्रोहों का प्रभाव भी स्थानीय क्षेत्र तक सीमित होता था।

2) आदिवासी विद्रोह **वर्गीय आधार के बजाय जातीय आधार** पर होते थे, यथा- संथाल, कोल, मुंडा, भील इत्यादि।

3) ये विद्रोह पुरातन मूल्यों एवं आदर्शों से प्रेरित होने के कारण **सुधारवादी दृष्टिकोण** से संचालित थे।

4) विद्रोहियों ने **परम्परागत सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था** को बचाए रखने के साथ-साथ सामाजिक-धार्मिक सुधारों को भी प्राथमिकता दी।

5) ये विद्रोह **हिंसक एवं उग्रवादी** स्वरूप के थे।

6) जनजातीय विद्रोह **औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध न होकर स्थानीय शक्तियों,** जैसे-ज़मींदारी व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था आदि के विरुद्ध होते थे। इन्होंने केवल शोषक वर्ग का विरोध किया।

7) जनजातीय वर्गों के पास विद्रोह के लिये **परम्परागत हथियार** ही उपलब्ध थे, जबकि अंग्रेज़ी सेना प्रशिक्षित एवं आधुनिक हथियारों से युक्त थी।

1) Tribal/tribal revolts were related to local issues and the effect of these revolts was also limited to the local area.
2) The tribal revolts were based on caste rather than class basis, such as Santhal, Kol, Munda, Bhil etc.
3) These rebellions were driven from the reformist point of view, being inspired by the ancient values and ideals.
4) The rebels gave priority to socio-religious reforms along with preserving the traditional social and economic order.
5) These rebellions were of violent and extremist nature.
6) Tribal revolts were not against the colonial powers but against the local powers like zamindari system, police system etc. He only opposed the exploiting class.
7) Traditional weapons were available with the tribal classes for rebellion, while the English army was trained and equipped with modern weapons.

5.2.5) जनजातीय आंदोलन की सीमाएं

1) विद्रोहों का स्थानीय स्वरूप

2) सुस्पष्ट पूर्व योजना का अभाव

3) औपनिवेशिक शासन प्रणाली की वास्तविक समझ का अभाव

4) योग्य एवं राष्ट्रीय नेतृत्व का अभाव

5) आधुनिक हथियारों एवं प्रशिक्षण का अभाव

6) सरकार द्वारा व्यापक दमन एवं हिंसा

5.2.5) Limitations of Tribal Movement

1) Local nature of rebellions

2) Lack of clear pre-planning

3) Lack of real understanding of the colonial system of governance

4) Lack of qualified and national leadership

5) Lack of modern weapons and training

6) Massive repression and violence by the government

1) ये विद्रोह **राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज नहीं** करा सके। फलतः ब्रिटिश सरकार द्वारा व्यापक दमन एवं हिंसा से इन आंदोलनों को प्रायः शांत कराया दिया जाता था

2) इन विद्रोहों का **तात्कालिक उद्देश्य केवल शोषणकारी व्यवस्था के अंत** तक ही सीमित था और इसके पश्चात किसी नवीन व्यवस्था की योजना भी आदिवासियों के पास नहीं थी

3) आदिवासी अपनी **क्षेत्रीय समस्याओं का समाधान** चाहते थे, उन्हें ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों एवं गतिविधियों का पूरी तरह ज्ञान नहीं था, इसीलिए ये समग्र रूप से ब्रिटिश सरकार क्च खिलाफ संगठित रूप में विद्रोह नहीं कर सके

4) विद्रोहों का **स्वरूप स्थानीय एवं क्षेत्रीय** होने के कारण इनको राष्ट्रीय स्तर के नेताओं का नेतृत्व नहीं मिल सका

5) इनके पास तीर कमान, कुल्हाड़ी, भाला आदि पुराने एवं परम्परागत हथियार थे जो कि तोप एवं बंदूकों से लैस ब्रिटिशों की आधुनिक सेना का मुकाबला नहीं कर सके

6) ब्रिटिश सेना द्वारा **आक्रामक एवं बर्बरतापूर्वक** इन आंदोलनों को प्रायः नष्ट कर दिया जाता था

निष्कर्ष :- उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद भारत में घटित हुए ये जनजातीय विद्रोह साम्राज्यवादी एवं शोषणकारी शक्ति के विरुद्ध परम्परागत विद्रोह का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि, इन विद्रोहों का दमन कर दिया गया, फिर भी इन आदिवासी संघर्षों ने राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया।

1) These rebellions could not make their effective presence at the national level. As a result, these movements were often pacified by widespread repression and violence by the British government.
2) The immediate objective of these revolts was limited to end of exploitative system and after that tribals did not have any plan for any new system.
3) Tribals wanted a solution to their regional problems, they did not have complete knowledge of British colonial policies and activities, so they could not rebel in an organized way against the British government as a whole.
4) Due to the local and regional nature of the revolts, they could not get the leadership of the leaders at the national level.
5) They had old and traditional weapons like arrowhead, axe, spear etc., which could not compete with the modern army of British armed with cannon and guns.
6) These movements were often destroyed by the British army aggressively and barbarously.

Conclusion:- Despite the above limitations, these tribal revolts that took place in India present a classic example of traditional rebellion against the imperialist and exploitative power. Although these revolts were suppressed, these tribal struggles provided a broad social base to the national movement.

5.3) प्रमुख किसान विद्रोह || Major peasant revolt

1) कारण || Reason

3) स्वरूप || Nature

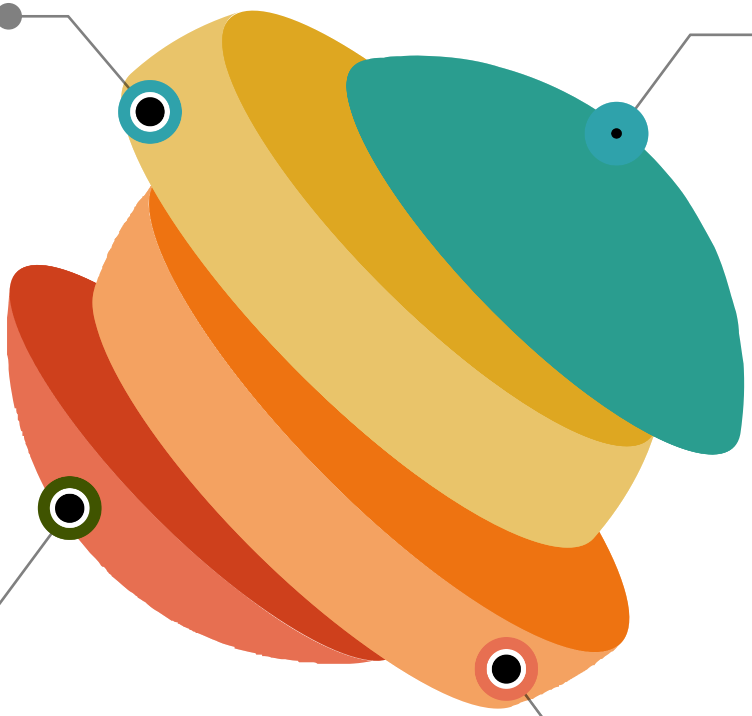

2) मुख्य आंदोलन || Major movement

4) उपलब्धियां || Achievements

5.3) Major peasant revolt

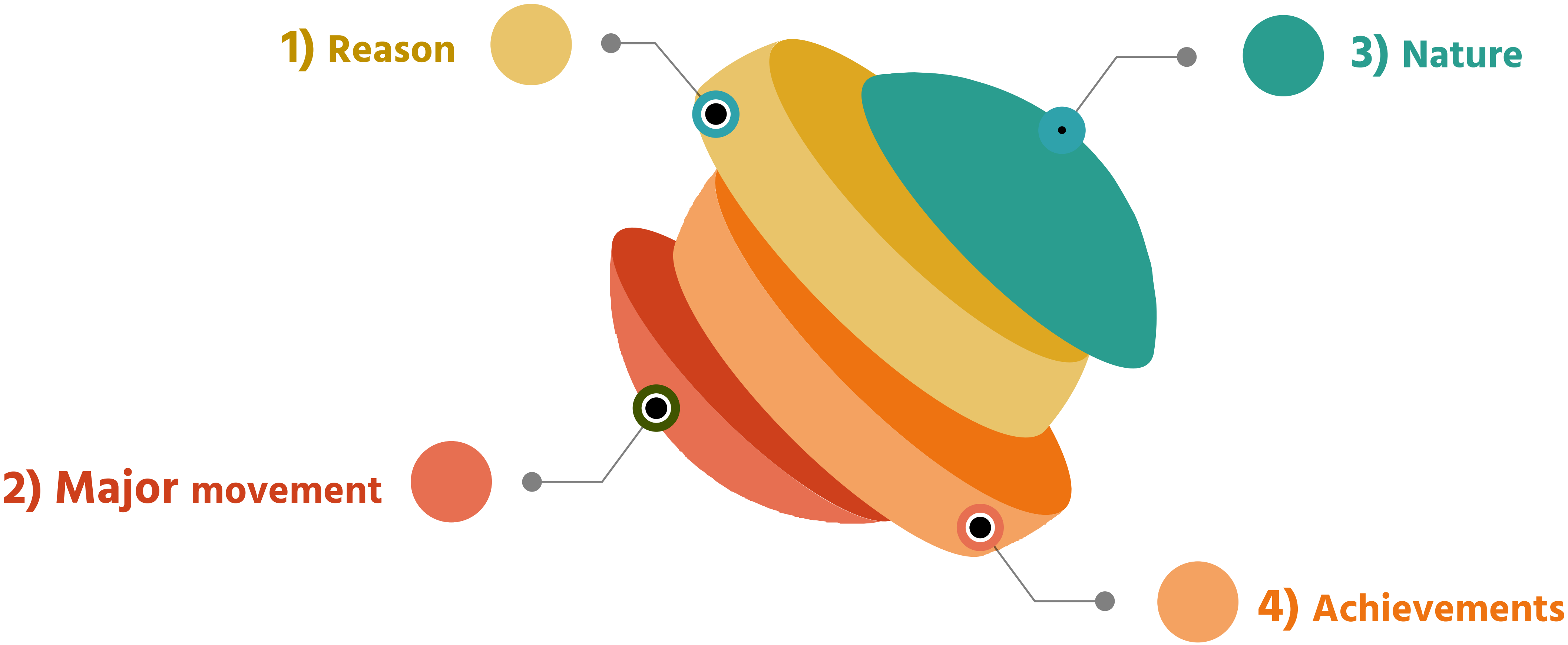

5.3.1) कारण || Reason

1) औपनिवेशिक आर्थिक व भू राजस्व नीतियां :-

- रैम्यतवाडी, महालवाड़ी जैसे व्यवस्थाओं से अधिकतम भू राजस्व वसूली
- जमींदारों का महाजनों द्वारा शोषण
- कृषि का बलात वाणिज्यकरण
- धन का निष्कासन

2) पारंपारिक कृषि प्रणाली का ह्रास :-

- झूम कृषि पर प्रतिबंध
- सामूहिक कृषि पर रोक

3) अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां :-

- प्रथम विश्वयुद्ध व आर्थिक महामंदी के कारण खाद्यान्न समस्या
- रूसी क्रांति (1917) के बाद राष्ट्रवादियो का कृषि समस्याओं के और ध्यान आकर्षण

4) अन्य कारण :-

- 20 वी सदी में राष्ट्रीय व क्षेत्रों किसान संगठनों जैसे अखिल भारतीय किसान सभा (1936) का उदय
- प्रेस व समाचार पत्रों द्वारा किसान आंदोलनों को समर्थन :- दीनबंधु मित्र के नाटक "नील दर्पण व हरिश्चंद्र मुखर्जी के साप्ताहिक समाचार पत्र "हिंदू पैट्रियाट" द्वारा जागरूकता
- अकालो की पुनरावृत्ति व अकाल राहत नीति का अभाव
- ब्रिटिश न्याय व पुलिस व्यवस्था द्वारा शोषण

5.3.1) Reason

1) Colonial Economic and Land Revenue Policies :-

- Maximum land revenue recovery from systems like Rayatwadi, Mahalwadi
- Exploitation of landlords by moneylenders
- Forced commercialization of agriculture
- Drain of money

2) Decline of traditional farming system :-

- Ban on shifting agriculture
- Ban on collective farming

3) International conditions :-

- Food problem due to the First World War and the Great Depression
- Further attention of nationalists to agricultural problems after the Russian Revolution (1917)

4) Other reasons:-

- The rise of national and regional farmer organizations such as the All-India Kisan Sabha (1936) in the 20th century
- Support to peasant movements by press and newspapers: - Awareness through Dinabandhu Mitra play "Nil Darpan" and Harishchandra Mukherjee's weekly newspaper "Hindu Patriot"
- Recurrence of famines and lack of famine relief policy
- Exploitation by the British justice and police system

5.3.2) मुख्य कृषक आंदोलन

1) 1857 के पूर्व

1. रंगपुर, 1783
2. पागलपंथी, 1824
3. प्रथम मोपला विद्रोह

2) 1857 से 1900

1. नील विद्रोह, 1859 -60
2. पाबना विद्रोह, 1873- 1876
3. दक्कन विद्रोह, 1875
4. फड़के, 1879
5. दिरांग, 1893

3) 1900 से 1947

1. पाइक, 1904
2. चंपारण सत्याग्रह. 1917
3. खेड़ा सत्याग्रह, 1918
4. मालाबार मोपला विद्रोह, 1921
5. संयुक्त प्रांत किसान आंदोलन, 1919-22
6. एका आंदोलन, 1921 -22
7. बारदोली सत्याग्रह, 1928
8. वर्ली आंदोलन, 1945
9. तेभागा आंदोलन, 1946
10. तेलंगाना आंदोलन, 1946 - 51

5.3.2) Major Peasant Movements

1) Before 1857

1. Rangpur, 1783
2. The Pagalpanthi revolt, 1824
3. First moplah revolt

2) Between 1857 to 1900

1. Nile Rebellion, 1859 -60
2. Pabna Rebellion, 1873-1876
3. Deccan Rebellion, 1875
4. Phadke, 1879
5. Dirang, 1893

3) Between 1900 to 1947

1. Pike, 1904
2. Champaran Satyagraha. 1917
3. Kheda Satyagraha, 1918
4. Malabar Moplah Rebellion, 1921
5. United Provinces Peasant Movement, 1919-22
6. Eka Movement, 1921 -22
7. Bardoli Satyagraha, 1928
8. Worli Movement, 1945
9. Tebhaga Movement, 1946
10. Telangana Movement, 1946 - 51

1) रंगपुर का कृषक विद्रोह, 1783

1) **क्षेत्र :-** बंगाल से सटे बह्मपुत्र घाटी का रंगपुर क्षेत्र

2) धीरज नारायण के नेतृत्व में जमीदार देवी सिंह के विरुद्ध

3) **कारण :-** ब्रिटिश भू राजस्व व्यवस्था

2) पागल पंथी विद्रोह (1824-1850)

1) पागल पंथी(वाउल संप्रदाय) की स्थापना करम शाह व पुत्र टीपू शाह ने की थी

2) **क्षेत्र :-** फिरोजपुर(बंगाल)

3) **कारण :-** ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था व जमीदारों द्वारा किसानों का शोषण

3) नील विद्रोह (1859-1860)

1) **क्षेत्र :-** बंगाल के नादियां जिले में स्थित गोविंदपुर गांव से आरंभ होकर जैसोर, खुलना, राजशाही, ठाका आदि

2) **नेतृत्वकर्ता :-** दिगम्बर विश्वास व विष्णु विश्वास

3) 1857 की क्रांति के पश्चात प्रथम संगठित विद्रोह

4) **कारण :-**

- ब्रिटिश अशिकारियों द्वारा बंगाल व बिहार के किसानों से जबरन नील की खेती
- किसानों को नील उत्पादन हेतु बाजार भाव से अत्यंत कम अग्रिम राशि देना
- न्याय प्रणाली द्वारा यूरोपीय पक्ष में निर्णय

5) **परिणाम :-** 31 मार्च 1860 को अंग्रेजों द्वारा W. S. सीटोनकर की अध्यक्षता में नील आयोग का गठन - किसी भी किसान को नील की खेती हेतु बाध्य नहीं किया जाएगा

1) Peasant Rebellion of Rangpur, 1783

1) **Area:-** Rangpur of the Brahmaputra Valley adjacent to Bengal
2) Under the leadership of Dheeraj Narayan, Zamindar against Devi Singh
3) **Reason:-** British land revenue system

2) Pagalpanthi rebellion (1824-1850)

1) PagalPanthi (Vaul Sect) was founded by Karam Shah and his son Tipu Shah.
2) **Area :-** Firozpur (Bengal)
3) **Reason :-** British land revenue system and exploitation of farmers by landlords

3) Nile Rebellion (1859-1860)

1) **Area :-** Starting from Govindpur village in Nadian district of Bengal to Jaisore, Khulna, Rajshahi, dhaka
2) **Leader:-** Digambar Vishwas and Vishnu vishwas
3) First organized revolt after the 1857
4) **Reason :-**
   - Forced Indians farmers of Bengal and Bihar to grow indigo by British officers Indigo
   - To give advance amount much less than the market price to the farmers for the production of indigo.
   - Decision favoring European by the justice system
5) **Result:-** On 31 March 1860, the British formed the Indigo Commission under the chairmanship of W. S. Sitonkar - no farmer was forced to cultivate indigo.

6) महत्व : -

- नील विद्रोह की सफलता भारतीय कृषकों के अनुशासन, एकता तथा परस्पर सहयोग के कारण हुई
- बुद्धिजीवियों का समर्थन

  - दीनबंधु मित्र का नाटक **नील दर्पण**
  - हरिश्चंद्र मुखर्जी का साप्ताहिक पत्र **"हिन्दू पैट्रियाट"**

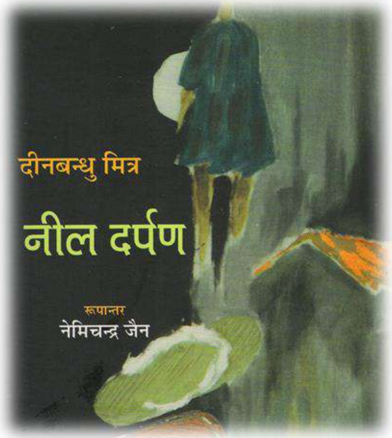

4) पाबना विद्रोह (1873-1876)

1) **क्षेत्र :-** पाबना (मध्य बंगाल)

2) **नेतृत्वकर्ता :-** ईशानचन्द्र राय, शंभूपाल, खोदी मल्लाह आदि ने मिलकर "किसान संघ" की स्थापना की

3) **प्रमुख कारण :-**
- जमीदारों द्वारा लगान की दरों को कानूनी सीमा से अधिक बढ़ा देना
- 1859 के अधिनियम के अधिनियम 10 के तहत काश्तकारों को जमीन पर मिले अधिकारों से जमीदारों द्वारा वंचित करना

4) **मुख्य तथ्य :-**
- यह आंदोलन अहिसंक व रचनात्मक था
- जमीदारों के विरुद्ध ना कि अंग्रेजों के – "हम महारानी और सिर्फ महारानी की रैय्यत होना चाहते हैं"
- भारतीय बुद्धिजीवियों द्वारा समर्थन - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने इंडियन एसोसिएशन के मंच से समर्थन किया

6) **Importance : -**

- The success of the Nile rebellion was due to the discipline, unity and mutual cooperation of the Indian farmers.
- Supported by intellectuals

⇩

- Deenbandhu Mitra play **Neel Darpan**
- Harishchandra Mukherjee's weekly paper "**Hindu Patriot"**

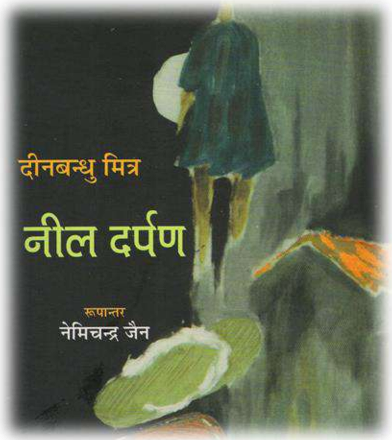

4) Pabna Rebellion (1873–1876)

1) **Area:-** Pabna (Central Bengal)

2) **Leader :-** Ishanchandra Rai, Shambhupal, Khodi Mallah etc. together established "Kisan Sangh".

3) **Major reasons :-**

- Raising the rates of rent by landlords beyond the legal limit
- Under section 10 of the Act of 1859, the tenants were deprived of the rights on the land by the landlords.

4) **Major facts :-**

- This movement was non-violent and constructive.
- Against the zamindars and not the British - "We want to be the queen and only queen's ryot"
- Support by Indian Intellectuals - Surendranath Banerjee supported by the Forum of Indian Association

- **जमींदार दर्पण (नाटक) -** मुशर्रफ हुसैन

5) **परिणाम :-**

- 1885 में बंगाल काश्तकारी अधिनियम पारित
- किसानों को उनकी जमीनें वापस कर दी गयी

5) दक्कन विद्रोह (1875)

1) **क्षेत्र :-** महाराष्ट्र (पूना, अहमदनगर, शोलापुर, सतारा आदि)

2) **स्वरूप :-** प्रारंभ में अहिंसक फिर हिंसक

3) **कारण :-**

- साहूकारों व महाजनों का अत्याचार व शोषण
- रैय्यतवाडी व्यवस्था में कर ना चुका पाने के कारण किसानों को अधिक दर पर महाजनों से ऋण लेना पड़ा
- 1864 में अमेरिकी गृह युद्ध समाप्ति के पश्चात कपास की कीमतों में भारी गिरावट
- 1867 में सरकार द्वारा भू-राजस्व दरों में 50% की वृद्धि

4) **विद्रोह :-**

- किसानों व बुलोटीदारों(नाई, धोबी, बढई आदि) द्वारा महाजनों का सामाजिक बहिष्कार
- इकरारनामों का दहन
- साहूकारों के घरों पर हमला

5) **परिणाम :-** 1879 में दक्कन कृषक राहत अधिनियम

6) दिरांग आंदोलन (1893-1894)

1) **क्षेत्र :-** कामरूप व दिरांग(असम)

2) **कारण :-** कामरूप व दिरांग क्षेत्रों में भू राजस्व दरों में 50 से 70% की वृद्धि

3) समर्थन न करने वालों का सामाजिक बहिष्कार

4) हुक्का पानी एवं नाई धोबी बंद

- **Zamindar Darpan (play) -** Musharraf Hussain

5) **Result:-**
- Bengal Tenancy Act passed in 1885
- Returned their lands to the farmers

5) Deccan Rebellion (1875)

1) **Area :-** Maharashtra (Poona, Ahmednagar, Sholapur, Satara etc.)

2) **Nature :-** Initially nonviolent then violent

3) **Reason :-**
- Exploitation by moneylenders and sahukar
- Due to non-payment of taxes in Ryotwadi system,farmers had to take loans from the moneylenders at a higher rate.
- A sharp drop in cotton prices after the end of the American Civil War in 1864
- 50% increase in land revenue rates by the government in 18

4) **Revolt :-**
- Social boycott of moneylenders by farmers and bullydars (barber, washerman, carpenter etc.)
- burning of agreements
- Attacked houses of moneylenders

5) **Result :-** Deccan Farmers Relief Act of 1879

6) Dirang Movement (1893-1894)

1) **Area :-** Kamrup and Dirang (Assam)

2) **Reason :-** - Increase in land revenue rates by 50 to 70% in Kamrup and Dirang areas

3) Social boycott of those who do not support

4) Hookah water and barber washer closed

7) चंपारण सत्याग्रह (1917)

1) महात्मा गांधी का भारत में प्रथम सत्याग्रह

2) **क्षेत्र :-** उत्तरी बिहार का चंपारण जिला, मोतिहारी, बेतिया, मधुबनी

3) **नेतृत्व :-** महात्मा गांधी

4) **कारण :-**

- **तिनकठिया पद्धति** - यूरोपीय बागान मालिकों का किसानों से अनुबंध जिसके अनुसार 3/20 हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था
- रासायनिक रंगों के आविष्कार से नील की मांग में गिरावट
- यूरोपीयों ने किसानों से अनुबंध समाप्त करने हेतु शरहवेशी व तावान(एक मुश्त मुआवजा) की दरों को बढ़ा दिया

5) **सत्याग्रह :-**

- 1917 में राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गांधी जी, बृजकिशोर, सी एफ एंड्रूज, नारायण सिंह, राजकिशोर प्रसाद, H. S. पोलाक, राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे बी कृपलानी का चंपारण आगमन
- गांधी जी ने किसानों को संग्रहित करके भारत में प्रथम अहिंसात्मक सत्याग्रह किया

6) **परिणाम :-**

- अंग्रेजों द्वारा गांधी जी की सदस्यता वाले जांच आयोग का गठन
- सरकार द्वारा तिनकठिया पद्धति की समाप्ति
- यूरोपीय बागान मालिक अवैध वसूली का 25% हिस्सा किसानों को लौटा दे
- रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा गांधी जी को महात्मा की उपाधि
- एन जी रंगा द्वारा गांधी जी का विरोध

7) Champaran Satyagraha (1917)

1) Mahatma Gandhi's first Satyagraha in India

2) **Area :-** Champaran District of North Bihar, Motihari, Bettiah, Madhubani

3) **Leader :-** Mahatma gandhi

4) **Tinkathia system :-**
   - ╙ **Tinkathia system**- European contract with farmers according to which it is mandatory to cultivate indigo on 3/20 share
   - ╙ Demand of indigo declined due to invention of chemical dyes.
   - ╙ The Europeans raised the rates of sharaveshi and tawan (one-time compensation) to terminate the contract with the farmers.

5) **Satyagraha:-**
   - ╙ Gandhiji, Brijkishore, CF Andrews, Narayan Singh, R Prasad, H. S. Pollak, R Prasad, Mahadev Desai, Narhari Parikh, JB Kriplani arrived in Champaran in 1917 at the request of Rajkumar Shukla.
   - ╙ Gandhiji organized the first Satyagraha in India by collecting farmers.

6) **Result :-**
   - ╙ Formation of a commission of inquiry by the British with the membership of Gandhiji
   - ╙ Abolition of Tinkathia system by the government
   - ╙ European planters return 25% of illegal recovery to farmers
   - ╙ Gandhiji's title of Mahatma by Rabindranath Tagore
   - ╙ Opposition of Gandhiji by N. G. Ranga

8) खेड़ा सत्याग्रह (मार्च 1918)

1) **क्षेत्र :-** खेड़ा (गुजरात)

2) **नेतृत्वकर्ता :-** महात्मा गांधी

3) **सहयोगी :-** सरदार पटेल, इंदुलाल याग्निक, मोहनलाल पांड्या, विट्ठल भाई पटेल

4) **कारण :-**

- 1917-18 में अकाल के कारण कम कृषि उत्पादन के बाद भी लगान की मांग
- यह लगान संहिता का उल्लंघन था, जिसके अनुसार 25% से कम उपज होने पर लगान माफी का प्रावधान था

5) **परिणाम :-** गांधी जी द्वारा सत्याग्रह के तहत कर ना देने की मांग के कारण ब्रिटिश सरकार का आदेश कि लगान सिर्फ सक्षम लोगों से लिया जाए

9) मालाबार का मोपला विद्रोह

1836-1854 | 1921

1) **मोपला :-** मालाबार तट पर निवास करने वाले अरब मूल के मुस्लिम किसान

2) **1836 से 1854 तक प्रथम विद्रोह :-**

- **कारण :-** जमींदारों(प्रायः हिन्दू उच्च जाति के लोग) द्वारा अत्याधिक लगान वसूली
- **नेतृत्व :-** थंगल, सैयद अलावी, सैयद फजल
- **परिणाम :-** सभी नेतृत्वकर्ताओं को भारत से निर्वासित करके मालाबार अत्याचार निवारण कानून को पारित किया

8) Kheda Satyagraha (March 1918)

1) **Area :-** Kheda (Gujarat)

2) **Leader :-** Mahatma Gandhi

3) **Associate :-** Sardar Patel, Indulal Yagnik, Mohanlal Pandya, Vitthal Bhai patel

4) **Reason:-**
   - Demand for rent even after low agricultural production due to famine in 1917-18
   - This was a violation of the Rent Code, according to which there is a provision for waiver of rent if the yield is less than 25%.

5) **Result:-** Due to Gandhiji's demand not to pay taxes under Satyagraha, the British government ordered that the rent should be taken only from capable people.

9) Moplah Rebellion of Malabar

1836-1854 | **1921**

1) **Moplah : - -** Muslims farmers of Arab origin living on the Malabar Coast

2) **1836 से 1854 तक प्रथम विद्रोह :-**
   - **Reason :-** Exorbitant rent by landlords (usually Hindu upper caste people)
   - **Leader :-** Thangal, Syed Alawi, Syed fazal
   - **Result : -** Passing the Malabar Atrocities Prevention Act by deporting all the leaders from India

3) द्वितीय मोपला विद्रोह (1921) :-

- **कारण -** लगान की उच्च दरें, जमीदारों ब्रिटिश राज की शोषण कारी नीतियां
- **स्वरूप व विद्रोह -**
  - प्रारम्भ में अहिंसक जो असहयोग आंदोलन से जुड़ा था
  - गांधी जी व अन्य राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन
  - अप्रैल 1920 में मालाबार काँग्रेस कमेटी ने मंजेरी सभा का आयोजन किया
  - अंग्रेजों द्वारा तिरुरांगड़ी मस्जिद में छापे के बाद हिंसात्मक स्वरूप।मोपलाओं द्वारा सरकारी संपत्ति का विनाश व अधिकारियों की हत्या
- **नेतृत्व -** अलीमुसलियार, वेरियन कुन्नाथ आदि
- **परिणाम -** 2500 से अधिक मोपलाओं की हत्या करने अंग्रेजों द्वारा विद्रोह का दमन
- **तथ्य -**
  - इस विद्रोह को दबाने के लिए सरकार ने सेना का सहारा लिया तथा हिंदुओं को भड़काया जिससे विद्रोह सांप्रदायिक हो गया
  - मूलतः यह विद्रोह साम्राज्यवाद और सामंतवाद विरोधी था
  - अंग्रेजों की बर्बरता की एक मिसाल देते हुए सुमित सरकार ने लिखा, '20 नवम्बर को पोडुनूर में रेल के एक बन्द डिब्बे में 66 मोपलों के शव मिले जिनकी मौत दम घुटने के कारण हुई थी, स्कूल में पढ़ने वाला विद्यार्थी सिराजुद्दौला की 'कालकोठरी' के बारे में जानता है, जो पूर्णतः काल्पनिक नहीं तो अत्यन्त बढ़ा-चढ़ा कर अवश्य कही गई है, परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत में भी बहुत कम लोगों ने पोडुनूर की 'कालकोठरी' की निर्विवाद घटना के बारे में सुना है।'
  - मोपला संघर्ष में 2,337 संघर्षकर्ता मारे गए, 1,652 घायल हुए तथा 45,404 बन्दी बनाए गए

3) Second Moplah Rebellion (1921) :-

- **Reason -** High rates of rent, exploitative policies of the zamindars of the British era
- **Nature and revolt-**
  - Initially non-violent who was associated with the non-cooperation movement
  - Support of Gandhiji and other national leaders
  - In April 1920, the Malabar Congress Committee organized the Manjeri Sabha.
  - Violent nature after British raid on Tirurangadi Mosque. Destruction of government property and killing of officials by Moplahs
- **Leader -** Alimusliyar, Varian Kunnath etc.
- **Result -** Suppression of rebellion by the British killing more than 2500 Moplahs
- **Fact -**
  - To suppress this rebellion, government took the help of the army and instigated Hindus, due to which the rebellion became communal.
  - Originally this rebellion was anti-imperialist
  - Giving an example of brutality of British, Sumit Sarkar wrote, 'On 20th November, the bodies of 66 moplers who died due to suffocation were found in a closed railway compartment at Podunoor, the school student of Sirajuddaula's 'dungeon'. which is said to be exaggerated if not wholly imaginary, but how surprising that even in independent India very few people have heard of the indisputable incident of the 'dungeon' of Podunoor.'
  - 2,337 fighters killed, 1,652 injured and 45,404 taken prisoner in Moplah clash

10) संयुक्त प्रान्त / अवध का किसान आंदोलन

1) **क्षेत्र :-** संयुक्त प्रान्त (प्रतापगढ़, रायबरेली, सुल्तानपुर, फैजाबाद आदि)

2) **नेतृत्वकर्ता :-** अवध किसान सभा, बाबा रामचन्द्र, जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, गौरी शंकर मित्र, दुर्गापाल सिंह, झिंगुरी सिंह आदि

3) **कारण :-**

- अवध के जमीदारों को कृषक मामलों में पूरी छूट
- जमीदारों द्वारा किसानों से अत्याधिक लगान वसूली
- जमीदारों को ब्रिटिश सरकार का समर्थन
- किसानों की बेदखली

4) **आंदोलन :-**

- मदनमोहन मालवीय, मोतीलाल नेहरू, गौरीशंकर मिश्र, इंदु नारायण द्विवेदी द्वारा 1918 में उत्तर प्रदेश किसान सभा का गठन
- 1919 में कॉंग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में व्यापक भागीदारी
- 1919 में झींगुरीपाल सिंह व दुर्गापाल सिंह द्वारा प्रतापगढ़ के जमीदारों का सामाजिक बहिष्कार(नाई-धोबी बंद)
- बाबा रामचन्द्र(महाराष्ट्र निवासी) के प्रयासों से 1920 में अवध किसान सभा का गठन, जिससे कालांतर में जवाहरलाल नेहरू जुड़े
- दिसंबर 1920 में अयोध्या में विशाल कृषक सम्मेलन

5) **परिणाम :-** 1921 में अवध मालगुजारी अधिनियम द्वारा किसानों को सीमित राहते

10) Peasant Movement of United Provinces / Awadh

1) **Area :-** United Provinces (Pratapgarh, Rae Bareli, Sultanpur, Faizabad)

2) **Leader : -** Awadh Kisan Sabha, Baba Ramchandra, Jawaharlal Nehru, Madan Mohan Malviya, Gauri Shankar Mitra, Durgapal Singh, Jhinguri Singh etc.

3) **Reason :-**
   - Full exemption to landlords of Awadh in agricultural matters
   - Excess rent from the farmers by the zamindars
   - British government's support to landlords
   - Eviction of farmers

4) **Movement:-**
   - Uttar Pradesh Kisan Sabha was formed in 1918 by Madan Mohan Malviya, Motilal Nehru, Gaurishankar Mishra, Indu Narayan Dwivedi
   - Wide participation in the Amritsar session of Congress in 1919
   - Social boycott of the zamindars of Pratapgarh by Jhanguripal Singh and Durgapal Singh in 1919 (barber-dhobi bandh)
   - Awadh Kisan Sabha was formed in 1920 by the efforts of Baba Ramchandra (resident of Maharashtra), to which Jawaharlal Nehru later joined
   - Farmer conference in Ayodhya in December 1920

5) **Result :-** Limited relief to the farmers by the Avadh Revenue Act in 1921.

11) बारदोली सत्याग्रह (1928)

1) **क्षेत्र :-** बारदोली, सूरत, गुजरात

2) **नेतृत्वकर्ता :-** सरदार वल्लभ भाई पटेल

3) **सहयोगी :-** महात्मा गांधी, मेहता बन्धु(कल्याण जी व कुंवर जी), दयालजी देशाई, केशवजी गणेश, नरहरि पारीख, जगतराम दवे

4) **महिलाएं :-** कस्तूरबा गांधी, मीठू बेन, भक्तिबा, मनीबेन पटेल, शारदाबेन शाह, शारदा मेहता आदि

5) **कारण :-**

- सूरत की कालिपराज जनजाति(गांधी जी द्वारा नाम परिवर्तन - रानीपराज) में प्रचलित हाली पद्धति(बंधुआ मजदूर)
- कपास की कम कीमत के बाद भी 30%लगान वृद्धि
- विरोध करने पर भी मात्र 8% राहत

6) **आंदोलन :-**

- मेहता बन्धुओं द्वारा **कालिपराज साहित्य** का सृजन
- गांधी जी द्वारा उत्थान का प्रयास
- KM मुंशी व लालजी नारंगी द्वारा बम्बई विधान परिषद की सदस्यता से त्यागपत्र
- महिलाओं की सक्रिय भागीदारी

7) **परिणाम :-**

- **ब्रुमफील्ड और मैक्सवेल समिति** की सिफारिश पर भूराजस्व दर को घटाकर 6.03% कर दिया
- गांधी जी व बारदौली की महिलाओं के द्वारा वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि
- लंदन में प्रकाशित **न्यू स्टेटमैन** ने लिखा कि इस आंदोलन के **दूरगामी परिणाम** होंगे

11) Bardoli Satyagraha (1928)

1) **Area :-** Bardoli, Surat, Gujarat

2) **Leader :-** Sardar Vallabh Bhai Pate

3) **Assistance :-** Mahatma Gandhi, Mehta brothers (Kalyan ji and Kunwar ji), Dayalji Desai, Keshavji Ganesh, Narhari Parikh, Jagatram dabe

4) **Women :-** Kasturba Gandhi, Mithu Ben, Bhaktiba, Maniben Patel, Shardaben Shah, Sharda Mehta

5) **Reason:-**
   - Hali system (bonded labor) prevalent in the Kaliraj tribe of Surat (name change by Gandhiji - Raniparaj)
   - 30% revenue hike even after low cotton price
   - Even after protesting, only 8% relief

6) **Movement :-**
   - The creation of Kaliraj literature by the Mehta brothers
   - Gandhiji's attempt to uplift
   - Resignation from membership of Bombay Legislative Council by KM Munshi and Lalji Narangi
   - Active participation of women

7) **Result :-**
   - Lowered the land revenue rate to 6.03% on the recommendation of the Brumfield and Maxwell Committee
   - The title of Sardar to Vallabhbhai Patel by Gandhiji and the women of Bardauli
   - The New Statesman, published in London, wrote that the movement had far-reaching consequences.

12) एका आंदोलन

1) 1921-22 ई. में उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच और सीतापुर में
2) लगान में बढ़ोतरी एवं जमींदारों के शोषण के विरुद्ध
3) **नेतृत्व** – मदारी, पासी और सहदेव
   - किसानों को भूमि न छोड़ने, बेगार न करने आदि की शपथ दिलाई जाती
   - इस आंदोलन को छोटे ज़मींदारों का भी समर्थन प्राप्त हुआ।
4) मार्च 1922 ई. के अंत तक सरकार ने दमन का सहारा लेकर इस आंदोलन को समाप्त कर दिया
5) 1926 ई. में सरकार द्वारा आगरा काश्तकारी अधिनियम तथा 1939 ई. में यू.पी काश्तकारी अधिनियम पारित किया गया।

13) तेभागा आंदोलन

1) बंगाल में नवंबर 1946 से लेकर फरवरी 1947 तक
2) नेतृत्वकर्ता - कम्पाराम सिंह एवं भवन
   - बटाईदारों को जमीन के मालिकों को उपज का आधा और कभी-कभी तो उससे भी अधिक देना पड़ता था।
   - बंगाल भू-राजस्व आयोग (फ्लाउड कमीशन) ने अपनी रिपोर्ट में यह सिफारिश की थी कि किसान को उपज का 2/3 हिस्सा मिलना चाहिए और जमीन के मालिक को 1/3 भाग दिया जाए
   - फ्लाउड कमीशन की इस सिफारिश को लागू करने हेतु आन्दोलन
3) 1950 में काँग्रेस सरकार ने वर्गाधार विधेयक पारित कर आंदोलनकारियों की मांगों की पूर्ति की।

12) Eka Movement

1) In 1921-22 AD in Hardoi, Bahraich and Sitapur of Uttar Pradesh
2) Increase in rent and against exploitation of landlords
3) **Leader** – Madari, Pasi and Sahadeva
   - The farmers were administered oath not to leave the land, not to do forced labor etc.
   - The movement also found support from small landowners.
4) By the end of March 1922, the government ended this movement by resorting to repression.
5) Agra Tenancy Act was passed by the government in 1926 AD and UP Tenancy Act in 1939 AD

13) Tebhaga Movement

1) In Bengal from November 1946 to February 1947
2) Leader - Kamparam Singh & Bhawan
   - The sharecroppers had to pay half of the produce to the owners of the land and sometimes even more.
   - The Bengal Land Revenue Commission (Flood Commission) recommended in its report that the farmer should get 2/3 of the produce and the owner of the land should be given 1/3.
   - Movement to implement this recommendation of Floud Commission
3) In 1950, the Congress government fulfilled the demands of the agitators by passing the vargakar Bill.

14) वर्ली आंदोलन

1) यह संघर्ष बम्बई क्षेत्र के बहुसंख्यक वर्ली किसानों द्वारा शुरू किया गया था

2) उच्चब्याज दरपर लिए गए ऋण का भुगतान न कर पाने के कारण किसानों की अधिकांश जमीनें महाजनों एवं जमींदारों ने हथिया ली, परिणामस्वरूप किसानों ने विद्रोह कर दिया

3) सरकारद्वारा पुलिस कार्यवाही के बाद विद्रोह धीरेधीरे शांत हो गया

4) गोदावरी पुरुलेकर इस आंदोलन के प्रमुख नेता थे

NOTE

-: अखिल भारतीय किसान सभा :-

- स्थापना - अप्रैल 1936
- स्वामी सहजानंद सरस्वती अध्यक्ष तथा एन.जी. रंगा सचिव चुने गए। 1929 ई. में बिहार किसान सभा की स्थापना भी सहजानंद सरस्वती ने की
- इंदुलाल याज्ञनिक द्वारा किसान घोषणा-पत्र जारी किया था।
- 1936 ई. में अखिल भारतीय किसान सभा का सम्मलेन **फैज़पुर** में आयोजित किया गया।
- 1937 ई. के प्रांतीय चुनावों में जारी कांग्रेस के घोषणा-पत्र में अखिल भारतीय किसान सभा की मांगों को सम्मिलित किया गया था।

14) Warli Movement

1) This struggle was started by majority of Worli farmers of Bombay region.
2) Due to non-payment of loans taken at high interest rate, most of the farmers' land was taken over by the moneylenders and landlords, as a result of which the farmers revolted.
3) The rebellion gradually subsided after the police action by the government.
4) Godavari Purulekar the main leader of this movement

NOTE

-: All India Kisan Sabha :-

- ‡ Established - April 1936
- ‡ Swami Sahajanand Saraswati President and N.G. Ranga was elected secretary. In 1929 AD, the Bihar Kisan Sabha was also founded by Sahajanand Saraswati.
- ‡ Kisan Manifesto was released by Indulal Yagnik.
- ‡ In 1936, the conference of All India Kisan Sabha was organized in Faizpur.
- ‡ The demands of the All-India Kisan Sabha were included in the manifesto of the Congress issued in the provincial elections of 1937. था।

15) तेलंगाना आंदोलन

1) तेलंगाना हैदराबाद के निजाम रियासत का एक अंग था।

2) इस भूमि पर लगभग 20 लाख किसान अपना जीवन यापन करते थे।

3) इस क्षेत्र के किसानों की लगान बढ़ा दी गई और कम दाम पर अपने अनाज को बेचने के लिए बाध्य किया जाने लगा।

4) फलतः किसानों ने जमींदारों, साहूकारों, व्यापारियों एवं निजाम के अधिकारी के विरुद्ध 1946 में विद्रोह कर दिया विद्रोह का नेतृत्व कम्युनिष्ट नेता कमरैया कर रहे थे

5) आन्दोलन के दौरान निजाम की पुलिस ने कमरैया की हत्या कर दी। फलतः आन्दोलन हिंसात्मक हो गया

6) **छापामार युद्ध प्रणाली** अपना कर यहाँ के किसानों ने भारतीय इतिहास में सर्वाधिक अवधि तक चलने वाले कृषक संघर्ष का नेतृत्व किया।

7) किसानों ने मांग किया कि हैदराबाद रियासत को समाप्त कर इसे भारत का अंग बना लिया जाए स्वतंत्रतोपरान्त यह आन्दोलन स्वतः समाप्त हो गया

NOTE

बिहार में तीन प्रकार की भूमि का उल्लेख है -

- **बकाश्त भूमि :-** अस्थायी काश्तकारों को प्रत्येक वर्ष नीलामी या तय दरों के आधार पर प्रदत्त भूमि, बकाश्त भूमि कही जाती थी
- **रैय्यत भूमि :-** इस भूमि पर स्थायी स्वामित्व किसानों का था
- **जिस्ती भूमि :-** यह भूमि जमीदारों क्व स्वामित्व में आती थी जिस पर खेतिहर मजदूरों द्वारा खेती की जाती थी।

15) Telangana Movement

1) Telangana was a part of the Nizam State of Hyderabad.
2) About 20 lakh farmers lived on this land.
3) The rent of the farmers of this region was increased and they were forced to sell their grain at low prices.
4) As a result, the peasants revolted in 1946 against the landlords, moneylenders, traders and officers of the Nizam, the rebellion was led by the communist leader Kamariya.
5) During the movement, the Nizam's police killed Kamariya. As a result, the movement turned violent.
6) By **adopting guerilla warfare**, the farmers here led the longest peasant struggle in Indian history.
7) The farmers demanded that the princely state of Hyderabad should be abolished and made a part of India, after independence, this movement ended automatically.

NOTE

Mention of three types of land in Bihar -

- **Bakasat land:-** The land given to temporary tenants every year on the basis of auction or fixed rates, is called Bakash land.
- **Raiyyat land:-** The farmers had permanent ownership of this land.
- **Jisti land:-** - This land used to be owned by the landlords, which was cultivated by the agricultural laborers.

आंदोलन/अवधि	प्रभावित क्षेत्र	नेतृत्व	कारण	परिणाम
प्रारम्भिक मोपला विद्रोह (1836-54)	मालाबार	के. एम. हाजी, सिथी कोया थंगल	अंग्रेजों द्वारा नई राजस्व व्यवस्था लागू करना	अंग्रेज अधिकारियों व बिचौलियों पर हमला किया गया कई वर्षों तक ब्रिटिश सेना इन्हें दबा ना सकी
अवध किसान आंदोलन (1919-20)	प्रतापगढ़ रायबरेली सुल्तानपुर फैजाबाद	झिंगुरिपाल सिंह, बाबा रामचन्द्र	अवैध लगान व बेदखली अधिनियम लागू। अवध माल गुज़ारी(संशोधन अधिनियम) से लगान में बढ़ोत्तरी	1919 ई में प्रतापगढ़ में नाई धोबी सेवा बंद तथा सामाजिक बहिष्कार। बाबा रामचंद्र को जेल भेजने पर प्रदर्शन
एका आंदोलन (1921-22)	बाराबंकी, हरदोई, बहराइच, सीतापुर	मदारी पासी	लगान में बढ़ोत्तरी	इस आंदोलन में छोटे जमींदार भी शामिल हुए
मालाबार का मोपला विद्रोह (1921)	मालाबार	याकूब हसन, यू गोपाल मेनन, पी. मोयउद्दीन कोया, अली मुसलियार	अधिक लगान व बेदखली अंग्रेजों द्वारा अली मुदलियार को पकड़ने के लिए तिरुरांगड़ी की मस्जिद पर छापा मारा	पुलिस स्टेशन, सरकारी दफ्तर व जमीदारों के घर हमला। बाद में इसका स्वरुप साम्प्रदायिक हो गया। 1921 में विद्रोह को कुचल दिया गया। प्रशासन द्वारा 10000 मोपलाओं की हत्या

Rebellion	Area	Leader	Reason	Result
Early Moplah rebellion (1836–54)	Malabar	Of. M. Haji, Siti Koya Thangal	Implementation of new revenue system by the British	British officers and middlemen were attacked for many years the British army could not suppress them.
Awadh Peasant Movement (1919-20)	Pratapgarh RaiBareli Sultanpur Faizabad	Jhinguripal Singh, Baba Ramchandra	Illegal rent and eviction act implemented. Increase in rent due to Avadh Mal Gujari (Amendment Act)	In 1919 AD, barber washer service was closed in Pratapgarh and social boycott. Demonstration on sending Baba Ramchandra to jail
Eka Movement (1921–22)	Barabanki, Hardoi, Bahraich, Sitapur	Madari pasi	Increase in TAX	Small landlords also joined this movement.
Moplah Rebellion of Malabar (1921)	Malabar	Yakub Hasan, U Gopal Menon, P. Moyuddin Koya, Ali Musliyar	Excess tax and eviction British raided Tirurangadi mosque to capture Ali Mudaliar	Attack on police station, government office and landlord's house. Later it became communal in nature. The rebellion was crushed in 1921. The killing of 10000 Moplahs by the administration

आंध्र आंदोलन (1923-38)	तटीय आंध्र	एन जी रंगा, पी सदरैया, बनली सत्य नारायण, दन्दू सत्य नारायण राजू	खेत जोतने व मछली मारने के अधिकारों को लेकर संघर्ष छेड़ा गया	आंध्र प्रांतीय कृषक एसोसिएशन की स्थापना एनजी रंगा द्वारा 1923 में हुई उन्हीं के द्वारा गुंटूर जिले के निडोबेल गांव में 1933 में भारतीय किसान परिषद का गठन
मालाबार कृषक आंदोलन (1934-40)	केरल का मालाबार क्षेत्र	आर. रामचन्द्र वेदुमगड़ी, वी.कृष्ण पिल्लै, टी. प्रकाशम	सामंती वसूलियां, नवीनीकरण शुल्क व लगान की अग्रिम अदायगी	संगठनों ने 1929 में कृषक मालाबार काश्तकारी अधिनियम में सुधार के लिए आंदोलन छेड़ा। कांग्रेस सरकार इस्तीफा देने से पहले ऋणों में राहत देने के लिए एक कानून पास कर चुकी थी
बिहार में किसान आंदोलन (1929-39)	बिहार	स्वामी सहजानंद	जमीदारी उन्मूलन, गैर-कानूनी वसूली, काश्तकारों की बेदखली व काश्त जमीन की वापसी	1929 में स्वामी सहजानंद द्वारा बिहार प्रादेशिक किसान सभा का गठन कार्यानंद शर्मा ने मुंगेर के बड़हिया ताल में वकाश्त भूमि की वापसी के लिए आंदोलन चलाया गया में यदुनंदन शर्मा ने आंदोलन चलाया । 1938-39 तक सरकार द्वारा किए गए सुधारों और कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी से आंदोलन शांत हो गया

Andhra Movement (1923-38)	Coastal Andhra	N G Ranga, P Sadraiya, Banali Satya Narayan, Dandu Satya Narayan Raju	The struggle was waged for the rights to plough the fields and to kill the fish.	Andhra Provincial Farmers' Association was founded by NG Ranga in 1923 and formed the Indian Farmers Council in 1933 at Nidobel village in Guntur district.
Malabar Peasant Movement (1934-40)	Malabar region of Kerala	R. Ramachandra Vedaumgadi, V. Krishna Pillai, T. Prakasam	Feudal recoveries, renewal fees and advance payment of rent	The organizations started a movement in 1929 for the reform of the Farmers' Malabar Tenancy Act. Congress government had passed a law to give relief in debts before resigning
Peasant Movement in Bihar (1929-39)	Bihar	Swami Sahajanand	Zamindari abolition, illegal recovery, eviction of tenants and return of tenant land	In 1929, Swami Sahajanand formed the Bihar Regional Kisan Sabha. By 1938-39 the movement was pacified by the reforms carried out by the government and the arrest of activists.

पंजाब में किसान आंदोलन (1930-40)	जालंधर, अमृतसर, होशियारपुर, लावलपुर, शेखपुरा	सोहन सिंह भाकना, बेदी ज्याला सिंह, तेज सिंह, मास्टर हरि सिंह, बाबा रूर सिंह	भू राजस्व में कटौती, ऋणों के भुगतान में स्थगन तत्कालीन कारण अमृतसर लाहौर में भू राजस्व का पुनर्निर्धारण, नहर कर में वृद्धि	नौजवान भारत सभा, कीर्ति किसान कांग्रेस व अकाली दल के प्रयत्नों से 1937 में पंजाब किसान समिति का गठन हुआ। 1943 में कानून के द्वारा काश्तकारों को उनकी जमीन वापस मिली
वर्ली आंदोलन (1945-49)	बम्बई के निकट वर्ली क्षेत्र	गोदावरी पुरुलेकर	जंगलों के ठेकेदारों, भूमिपतियों, धनी कृषकों के बेगार के विरुद्ध	ये साम्यवादियों के प्रभाव में आ गए
तेभागा आंदोलन (1946-50)	दिनाजपुर, रंगपुर, जलपाईगुड़ी, मिदनापुर, 24परगना, खुलना	कृष्ण विनोदी राय, अवनि लाहिरी, सुनील सेन, भवानी सेन व मोनी सिंह	बटाईदारों ने फैसला किया कि आधे की जगह वे जोतदारों को एक तिहाई उपज देंगे। सरकार ने वर्गादार विधेयक पारित कर किसानों की मांगों की पूर्ति की	सुहरावर्दी मंत्रिमंडल ने बंगाल बर्गादार अस्थायी नियमन विधेयक प्रकाशित कर आंदोलन को कानूनी वैधता प्रदान की

Peasant Movement in Punjab (1930-40)	Jalandhar, Amritsar, Hoshiarpur, Lavalpur, Sheikhpura	Sohan Singh Bhakna, Bedi Jwala Singh, Tej Singh, Master Hari Singh, Baba Roor Singh	Deduction in land revenue, postponement in payment of loans, then due to re-fixation of land revenue in Amritsar, Lahore, increase in canal tax	Punjab Kisan Samiti was formed in 1937 by the efforts of Naujawan Bharat Sabha, Kirti Kisan Congress and Akali Dal. The tenants got their land back by law in 1943.
Worli Movement (1945-49)	Worli area near Bombay	Godavari Purulekar	Against forced labor of forest contractors, landowners, wealthy farmers	They came under the influence of communists
Tebhaga Movement (1946-50)	Dinajpur, Rangpur, Jalpaiguri, Midnapore, 24 Parganas, Khulna	Krishna Vinodhi Rai, Avni Lahiri, Sunil Sen, Bhavani Sen and Moni Singh	The sharecroppers decided that instead of half, they would give one-third of the produce to the jotedars. The government fulfilled the demands of the farmers by passing the Vargadar Bill.	Suhrawardy cabinet gave legal legitimacy to the movement by publishing the Bengal Bargadar Temporary Regulation Bill

पुन्नप्रा वायलार विद्रोह(1946)	त्रावणकोर	पनम धातु पिल्लई साम्यवादी जन	अन्न की कमी, दीवान सी पी. रामास्वामी अय्यर का अमेरिकी नमूना, ताकि अंग्रेजों के जाने के बाद एक स्वतंत्र त्रावणकोर उसके नियंत्रण में रहे	लगभग 800 लोग इस खूनी विद्रोह में मारे गए दवाब की नीति द्वारा रामास्वामी अय्यर को अमेरिकी नमूना त्यागने पर मजबूर किया गया
तेलंगाना आंदोलन(1946-1951)	तेलंगाना	संदरैया	निजाम, जमींदारों, साहूकारों तथा व्यपारियों के विरुद्ध संघर्ष। बेगार करवाना, जमीन हथियाना	यह सबसे बड़ा कृषक गुरिल्ला युद्ध रहा।

Punnapra Vayalar Rebellion(1946)	Travancore	Panam Dhatu Pillai Communist People	Food shortage, American model of Diwan CP Ramaswamy Iyer, so that after the departure of the British, an independent Travancore remained under his control	About 800 people were killed in this bloody rebellion; Ramaswamy Iyer was forced to abandon the American model by the policy of pressure.
Telangana Movement (1946–1951)	Telangana	sandaraiya	Struggle against the Nizams, Zamindars, moneylenders and traders. forced labor, land grab	It was the largest agricultural guerrilla war.

5.3.3) कृषक आंदोलन का स्वरूप/ प्रकृति

19 वीं सदी

1) 19वीं सदी के विद्रोह में मूलभूत परिवर्तन की कल्पना नहीं की गई बल्कि किसानों ने अपने तात्कालिक शोषणकर्ता के खिलाफ सरकार से विधि सम्मत सुधार के लिए संघर्ष किया
2) स्थानीय प्रकृति
3) आधुनिक राष्ट्रवाद के विचारों का अभाव
4) प्रारंभिक कृषक आंदोलनों में हिंसा एवं दमन का व्यापक प्रयोग किया गया और ब्रिटिश सरकार ने भी आंदोलनों को शांत करने हेतु व्यापक हिंसा एवं बल का प्रयोग किया था

20 वीं सदी

1) आर्थिक मांगों के साथ-साथ राजनीतिक एवं संवैधानिक मांगे भी शामिल
2) राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ाव - 1937 के प्रांतीय चुनावों में अखिल भारतीय किसान सभा की मांगों को कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में शामिल किया
3) राष्ट्रीय स्तर के के नेताओं द्वारा नेतृत्व, जैसे चंपारण सत्याग्रह का नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था
4) गांधीवादी सिद्धांतों एवं आदर्शों से प्रेरित - इन आंदोलनों में प्रायः सत्याग्रह, धरना, गिरफ्तारियां आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाता था

5.3.3 Nature of Peasant Movement

19th century

1) The rebellion of the 19th century did not envision fundamental change, but the peasants fought against their immediate exploiters for legal reform from the government.
2) local nature
3) Lack of ideas of modern nationalism
4) Violence and repression were used extensively in the early peasant movements and the British government also used extensive violence and force to quell the movements.

20th century

1) Along with economic demands, political and constitutional demands are also included.
2) Association with the National Freedom Movement - The Congress party included the demands of the All-India Kisan Sabha in its manifesto in the provincial elections of 1937.
3) Leadership by national level leaders, such as the Champaran Satyagraha was led by Mahatma Gandhi
4) Inspired by Gandhian principles and ideals, the methods of Satyagraha, dharnas, arrests, etc. were often used in these movements.

5.3.4) कृषक आंदोलन की उपलब्धियां

1) ब्रिटिश सरकार की औपनिवेशिक एवं शोषणकारी नीतियों को उजागर किया

2) परम्परागत जमीदारी व्यवस्था एवं साम्राज्यवादी शासन की जड़ें हिला दी

3) राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान राजनीतिक दलों में कृषि सुधार भी एक प्रमुख मांग बन गई

4) किसानों के संघर्ष के कारण ब्रिटिश सरकार को समिति एवं जांच आयोग का गठन करना पड़ा साथ ही कानूनों में आवश्यक परिवर्तन किए गए जो कि तत्कालीन आंदोलन की प्रमुख उपलब्धियां रहीं

5) इस दौरान अनेक किसान संगठन स्थापित हुए जिन्होंने न केवल किसान आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान किया अभी तो राष्ट्रीय आंदोलन को भी गति प्रदान की

6) वास्तव में इन आंदोलनों ने स्वाधीनता के उपरांत किए गए विभिन्न कृषि सुधारों के लिए एक अनुकूल वातावरण का निर्माण किया उदाहरण स्वरुप जमीदारी प्रथा का अंत

5.3.4) Achievements of the Peasant Movement

1) The colonial and exploitative policies of the British government were exposed
2) shook the roots of traditional zamindari system and imperialist rule
3) Agricultural reforms also became a major demand among political parties during the national independence struggle.
4) Due to the struggle of the farmers, the British government had to form a committee and commission of inquiry, as well as necessary changes were made in the laws, which were the major achievements of the then movement.
5) During this, many farmer organizations were established which not only provided leadership to the peasant movements, but also gave impetus to the national movement.
6) In fact, these movements created a favorable environment for various agricultural reforms carried out after independence, for example, the end of the Zamindari system.